भूमिका

भुमिका

तथागत बुद्ध के अब तक न जाने कितने पाली ग्रंथ एवं साहित्य प्रकाशित हो चुकी है, जिसमें साधारण जीवन यापन, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक पहलुओं पर अधिक ज़ोर दिया जाता रहा है। इस दिशा में भारतीय परिदृश्य को देखे तो साक्षात रूप में दर्शन होते है कि वास्ताविक भारत गाँवों में रहता है, इसी धारणा को आधार मानकर तथागत बुद्ध ने मानव को प्रकृति के बहुत करीब तक पहुँचाया और मानव कल्याण का नया रास्ता प्रशस्त किया जिससे कि स्वंय के अन्तर्मन में झाँका जा सके।

अब से ढाई हजार वर्षे पहले ही भगवान बुद्ध ने वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए विशेष प्रकार की प्रेरणा से अभिभूत होकर आन्दोलन चलाया था। उस समय भी यज्ञ के नाम पर हजारो पशू-पक्षियों, वृक्षों एव खाद्यान्य की आहुती दी जाती थी। भगवान बुद्ध बिना हिंसा के यज्ञ का प्रचार कर रहे थे। पशूओं के प्रति भी इतनी करूणा इतनी मैत्री भगवान बुद्ध के बात के लिए सदा आदर के साथ स्मरण किये जाएंगे कि उन्होंने अपने युग में यज्ञ के नाम पर होने वाली पशू हिंसा को समाप्त करवा दिया था।

कृषि कर्म उस समय अत्यन्त गौरवास्पद कार्य समझा जाता था। कृषि और कृषक की समस्याओं का हल तथागत बुद्ध ने बताया है और वह आधुनिक वर्तमान स्थिति में लागू होता है। इसकां उदाहरण हमें दीघनिकाय नामक ग्रन्थ के कुटदन्त सुत्त से प्राप्त होता है। इस लघु शोध कार्य वर्तमान में विदर्भ प्राप्त के किसानों की आत्महत्या और उसका निवारण कुटदन्त सुत्त के आधार पर लघु शोध कार्य करने हेतु प्रयास किया है। सर्वेक्षण एवं क्षेत्रीय शोध प्रविधि का उपयोग किया है तथा इसमें प्रश्नावली का उपयोग किया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का विषय ‘विदर्भ में

किसानों की आत्माहत्या के कारण व उपाय : कुटदन्त सुत्त के आधार पर वर्धा जिले के सन्दर्भ में’ है। इस लघु शोध प्रबन्ध को चार अध्यायों में विभाजित किया है।

1. प्रथम अध्याय किसानों कि आत्मसहत्या के आंकडे इस अध्याय में आत्महत्या करने वाले कृषको के आँकड़े दिये है। आत्महत्या के बाद समाचार पत्र में खबर प्रकाशित की जाती है और उनका कारण जानने का प्रयास किया हैं। आत्महत्या के संदर्भ में परिवार का तथा समाज का मत क्या है उसका वर्णन भी इस अध्याय में किया है।
2. द्वितीय अध्याय में किसानो के आत्महत्या की स्थितियाँ इस अध्याय में विदर्भ में वर्धा जिले के आर्थिक-सामाजिक, धार्मिक तथा पारिवारिक स्थिति का विश्लेषण किया है।
3. तृतीय अध्याय में कुटदन्त सुत्त और किसानों का जीवन इस अध्याय में कुटदन्त सुत्त का विश्लेषण तथा किसानों के जीवन के बारे में वर्णन किया है। धनिय सुत्त में दिये गए मानवी सुखी जीवन तथा भगवान बुद्ध के आसक्ति रहिंत उपदेश का क्रमनुसार वार्ताकर्म का वर्णन इस अध्याय में दिया है। इस अध्याय में कसिभारद्वाज सुत्त के आधार पर उस समय ब्रांह्मम खेती करने का वर्णन किया है एवं 500 हल चलाने की वर्णन भी किया गया है तथा कुटदन्त सुत्त का विस्तार से वर्णन किया गया है तथा शील का आचरण के इस विषय के संदर्भ में विश्ल्ेषण किया है।
4. चतुर्थ अध्याय में ‘आत्महत्या रोकने के उपाय’ इस अध्याय में कुटदन्त सुत्त का संदर्भ लेकर कृषको कि आत्महत्या रोकने आ सुझाव का वर्णन दिया गया है। बुद्ध विचारों से प्रेरित डॉ. आंबेडकर द्वारा आत्महत्या रोकने के लिय दिये हुए सुझावों का वर्णन इस आद्ययय में है।

परिशिष्ट में समाचार पत्रों के आधार पर प्राप्त तथ्यों को दर्शाने का प्रयास किया है....सभी के सहयोग से यह लघु शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास किया है।

***

प्रथम-अध्याय

प्रथम अध्याय

किसानों की आत्महत्या के आंकडे

आत्महत्या करनेवाले किसानों की संख्या हर दिन बढ रही है। वर्तमान स्थिती में किसान हवालदिल हो गया है। कृषि संपुर्णतया वर्षा पर निर्भर होती है। कभी अति वर्षा के कारण फसल नष्ट होती है तो कभी अवर्षण से तो कभी नैसर्गिक आपत्ती की वजह से जैसे बाढ आने के कारण फसल नष्ट होती है।

वर्धा जिले के संदर्भ में हमे जनवरी, 2013 से मार्च, 2014 तक कुल सौ (100) के ऊपर आत्मतहत्या के आंकडे मिले है। सरकारी दफ्तर से यह आकडा प्राप्त हुआ है। किसान आत्महत्या करने वाले वर्धा जिले के अलग-अलग तालुका, गाँव है। वर्धा जिले के तालुका मे आत्महत्या करने वाले किसानों को सुची बनाकर वह जिला कार्यालय में भेजी जाती है। जिला कार्यालय आफिस की एक समिती गठित की जाती है। जिससे आत्महत्या करने वाले किसानों की जाँच पड़ताल की जाती है। स्वयं जिला अधिकारी इन मामलो की स्वयं जाँच पडताल करते है। कभी कभी प्रत्यतक्ष स्थान पर जाकर मामलो की स्वयं जाँच पड़ताल करते है की सत्यता का पता चल सके इस प्रक्रिया मे परिवार से पुछताछ की जाती है। आस-पास के लागो से भी पुछताछ की जाती है कुछ मामलो मे रिश्तेजदारों से भी पुछताछ की जाती है ताकि आत्महत्या करने का सत्य का कारण मालुम पड सके।

जिन-जिन- किसानों ने आत्म हत्या की है उन सभी किसानों के परिवार को पात्र अपात्र कसौठी पर मुआवजा प्राप्त होता है। जिस किसान ने आत्महत्या की है उनके परिवार की संपुर्ण जानकारी ली जाती है। किस कारण किसान ने आत्महत्या की है उसकी जाँच की जाती है। समिती के आधार के नुसार आत्म्हत्या हुयी है तो उसे सामिति के आधार के नुसार आत्महत्या

हुयी है तो उसे समिती पात्र ठहराती है। अगर अन्य कारणों से किसान ने आत्महत्या की है तो उसे सरकार व्दारा मुआवजा नही मिलता है। समिती के कुछ निकष (**aspects**) होते है। उन निकष के आधार पर आत्महत्या पात्र अपात्र ठहराते है। आत्महत्या ग्रस्त परिवार को सहायता मिलती है। समिती के निकष के आधार पर भी वह आत्महत्या पात्र अपात्र ठहराते है। अगर किसान की फसल नष्ट न होने के कारण आत्म्हत्या की है। या अन्य दुसरे कारणों से आत्महत्या कि है तो उसे अपात्र ठहरति है। फसल अच्छी न होने के कारण तथा खेती क लिए सावकार से कर्ज लिया हो और वह किसान कर्जा चुकाने मं असमर्थ है ऐसे किसानों की आत्महत्या पात्र ठहराने का आदेश स्वयं जिला अधिकारी कार्यालय की समिती देती है। जिला कार्यालय व्दारा आत्महत्या करने वाले किसान के परिवार को 'पंतप्रधान पॅकेज' के नाम से करीब एक या दीड लाख तक सहायता प्रदान की जाती है, जो अपात्र है तथा जो प्रलाबित केसेस हे उनपर समिती बिठाकर इंक्वायरी के आदेश दिये जाते है अत: जो अपात्र ठहराते है उसे पंतप्रधान पॅकेज की सहायता नही मिलती है परन्तु जो प्रलांबित आत्माहत्या के केसेस पर पुनरविचार – विमर्श किया जाता है शायद ऐसे किसानों के परिवार को मदद मिल सके।

आत्महत्या करनेवाले कृषक के परिवार को कृषि भवन कार्यालय व्दारा सहायता दी जाती है इसके व्दारा कृषक के परिवार को शेती उपयोगी वस्तुए दी जाती है इस कार्यालय से कृषक को राशि नही दी जाती है। परंतु उन्हें लगभग पच्चीस हजार (२५०००/-) रूपये की कृषि के लिए वस्तूए दी जाती है इसमें कल्टीवेटर जैसी वस्तुएं सहायता क तौर पर दी जाती है जिससे कृषक का परिवार फिर से उठ खडा हो सके और अपनी जीविका कमाने के लिए कृषि कर सके। यह मदत सिर्फ सांत्वन के तौर पर मदत दी जाती है। परन्तु पंतप्रधान पॅकेज व्दारा कृषक को एक या देढ लाख नगद राशि या चेक दिया जाता है। यह पॅकेज कृषक के परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान करने साथ-साथ वर्तमान तथा भविष्य का भी समायोजन किया जाता है। वर्तमान

परिस्थिती को सुधारने के लिए तव्दतच भविष्य में भी आर्थिक पक्ष मजबूत करने में सहायता होती है।

कभी-कभी आत्महत्या के केसेस प्रलांबित होते है क्योंकि जिला कार्यालय को उसकी पुर्ण जानकारी नही होती है तथा अपुर्ण जानकारी की वजह से ऐसे केसेस प्रलांबित रहते है। ऐसी स्थिती में कृषक के परिवार को कठिनाईयों का सामना करना पडता है। वह हाल-बेहाल होते है परन्तु जिला कार्यालय को पुर्ण जानकारी देना अतिआवश्यक होता है। उसके सिवा सहायता निधी प्राप्त नही होती है और ऐसे केसेस को अपात्र ठहराते है।

वर्धा जिले में किसानों की आत्मतहत्या पर सर्वे करने के बाद पता चला है कि कृषक कर्ज के कारण आत्महत्या कर रहा है। कृषक बँक का कर्ज चुकाने में असमर्थ रहता है। ऐसी परिस्थिति में किसान सावकार से कर्ज लेता है। इसी आशा में कि इस बार फसल अच्छी होगी दुर्भाग्यवश उस समय भी फसल अच्छी नही हुयी तो वह संपूर्णत: मानसिक दबाव में आता है। कुटुंबप्रमुख होने के कारण उस पर परिवार की जिम्मेगदारी होती है। बँक का कर्ज चुकता न करने कारण पुनश्च्ग कर्ज नही मिला और सावकार से कर्ज लेने के लिए घर या खेती गिरवी रखता है। बाद में फसल अच्छी न होने के कारण वह सावकार का कर्ज चुकाने में असमर्थ रहता है। ऐसी हालात मे खेती या घर सावकार के पास गिरवी होने के कारण उत्पन्न का साधन याने खेती और रहने का घर पर सावकार का कब्जा होता है। इस भय के कारण किसान के पास जीवित रहने के लिए कोई वजह नही होती है। इसीलिए किसान के मन में आत्महत्या के विचार आते है। उनके मन में एक ही विचार आता है वह आत्महत्या करने का। इन सभी समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए वह आत्महत्या करता है और अपना जीवन समाप्तं करता है। ''वह जीवन के किसी न किसी पक्ष की उपेक्षा कर बेठता है, जिसके फलस्वजरूप दृष्टिकोन एकांगी बन जाता है। अत: आवश्य कता एक ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जो मुल्यों को उचित स्थान मिल सके” बुद्ध ने मनुष्य की

मूल समस्याओं को ठीक-ठीक समझा उन्होंने अपने जीवन को मानव सेवा में ही अर्पण कर दिया है। बौद्ध धर्म में एक आशा की झलक दृष्टिगोचर होती है। जीवन को अनमोल समझता है जिसमें आत्महत्या का कोई स्थान नही।

आत्महत्या करनेवाले किसान की खबर पहले समाचार पत्र में आती है मीडिया व्दार इस खबर को प्रकाशित की जाती है। इस खबर को मुख्य समाचार के रूप में समाज में देश में उभरकर सामने आती आत्महतत्या की खबर मुख्य रूप में आने के कारण उनकी तहकीकात है। समाचार पत्र एक ऐसा माध्यम है जो दुनिया की खबरे छापता है दुनिया को किसी भी कोने मे खबर प्रकाशित करता है। उसे न्याय देने का एक आईना के समान वह प्रतिबिंब दिखाता है।

समाचार पत्र में अल्लीपूर के राजू टेकाम नाम के किसान ने आत्महत्या की भी उस खबर को पहले दैनिक समाचार पत्र यानि ''दैनिक लोकमत'' में छपी थी खबर प्रकाश में लाने के लिए समाचार पत्र की बडा महत्वपुर्ण योगदान है। इस प्रकार ऐसे कई किसान है जिन्हों ने आत्महत्या की है उसे समाज के सामने देश के सामने उजागार करने का कार्य समाचार पत्र करता है समाचार पत्र का यह कार्य न्याय की और इंगित करता है अर्थात एक प्रकार से आत्महत्या करनेवाले किसान के परिवार को राहत मिलती है और उन्हे मददगार साबित होता है।

जिस किसान ने आत्महत्या की है ऐसे परिवार का साक्षात्कातर लेते समय यह दृष्टिगोचर हुआ की फसल अच्छी न होने के कारण किसान ने आत्महत्या की है अर्थात इस वार्तालाप में एक बात सामने आयी है जो कृषक कर्ज में डुबा हुआ उसे किसी तरह की मदत नही मिल सकी न ही बँक से,न ही सरकार से। पहले से ही बँक का कर्ज था वह चुकता नही कर पाया इस वजह से दोबारा उसे कृषि के लिए कर्जा नही मिल पाया कृषक अपना घर खेती सावकार के पास गिरवी रखता है किसान का मुख्य व्यवसाय खेती है उसको गिरवी रखकर सावकार से कर्ज लेता है कभी-कभी अतिवृष्टी होने के कारण या अवर्षन होने के कारण फसल नही होती है। नैसर्गिक

आपत्ती को वजह से फसल हाथ से निकल जाती है नैसर्गिक आपत्ती का कोई सामना नही कर पाता इसलिए कभी बाढ के कारण पूरी फसल नष्ट हो जाती है। ऐसे में किसान दबाव में आता है ऊपरीनिर्दिष्ट कारणों के वजह से किसान आत्महत्या करने का विचार उसके मन मे कार्यप्रवण होता हे। एकांगी पक्ष के कारण वह आत्महत्या करता है। जिसके के कारण किसान ने आत्महत्या की है वह कारण अन्य आत्महत्या करनेवाले किसान में पाये गये अत: यह साम्य दिखाई देता हे यानि निदर्शन में आया है।

किसान आत्महत्या करना है तो इसका परिणाम समाज में दिखाई देता है जैसे कुटदन्त सुत्त में 'महाविजित जातक' में भगवान बुद्ध ने कहा है कि प्रजा का आर्थिक पक्ष सशक्त होगा तो इन समस्याओं का सामना नही करना पडेगा'[1] इससे यही मालुम होता है कि बुद्ध काल में भी अनेक समस्याओं का सामना कृषक, प्रजा को करना पडता था। आज भी वही स्थिती है सिर्फ फर्क इतना है कि स्वरूप बदला है। अत: समस्याओं का मुल वही है।

कृषक समाज का एक हिस्सा है। परिवार के कर्तव्यों के ऊपर ही समाज की एकता तथा दृढता निर्भर है''इसीलिए आत्महत्या एक ऐसी विकृत मानसिकता है जो प्रदर्शित होती है। उसे मानव सम्बमन्धों को विकृत नही करना चाहिए ऐसी समस्या समाज के लिए हानिकारक है। अत: समाज की ठीक-ठीक व्यवस्था बनाये रखने के लिए सुलझे हुये व्याक्तियों की हर समय आवश्यकता है''[2] बिना अच्छे व्याक्तित्व का कोई मुल्यास नही होता है साथ-ही-साथ उन्होने यह भी जानना चाहिए की आत्महत्या परिवार, समाज को नुकसान पहुँचा सकता है। ऐसा व्यक्ती स्वयं तथा समाज का भला नही कर सकता। अर्थात इन सब चीजों का अनुकूल या प्रतिकूल परिणाम समाज पर पडता है। इसीलिए समाज का मत उनके प्रति कभी अनुकूल तथा प्रतिकुल भी होता है।

---

[1] दिधनिकाय-भिक्खु राहुल सांकृत्यायन,पृ-117

[2] डॉ. आंबेडकर का समजदर्शन- डॉ. डी.आर. जटाव- पृ-82

भगवान बुद्ध ने गरीबी को शुभ अवस्था नही माना और न उन्होंने यह कहा कि गरीब लोग स्वर्ग आदि में सुख पायेंगे अथवा अपने दु:खो के बदले में इस भूमि पर राज्य करेंगे। बुद्ध ने बात कुछ और कही इनके अनुसार,'धन का स्वागत है। किन्तु उन्होंने बल इस बात पर दिया कि धन की प्राप्ति विनय के व्दारा होनी चाहिए। अर्थात दोषपुर्ण ढंग से एकत्रित किया हुआ धन शोषण का प्रतिक है।

भारतीय समान ऐसी आत्महत्या करने वालों को कडी आलोचना करते है तो कभी उसके साथ हमदर्दी दिखाते है जिसके सामाजिक सम्बंध बिगडने की संभावना रहती है समाज अपना स्पष्ट मत देने में कतराता है फिर भी ज्यादातर लोग आत्महत्या करने वाले किसानों की तरफ झुकाव होता है।

इस प्रकार डॉ.अम्बेडकर के अनुसार एक अच्छा नागरिक बनने के लिए अपने कर्तव्य को भलीभाति निभाने के लिए अपनी प्रगती करने के लिए तथा सामाजिक हित का ध्यान रखने के लिए आवश्यकता इस बात की है की खेती के साथ-साथ अन्यक व्यवसाय करने के लिए सरकार से अनुदान प्राप्त होना चाहिए और रोजगार मिले अच्छा वेतन मिले और अवकाश की सुविधाएं प्राप्त हो इस तरह सभी लोगों की प्रगती हो सकती है। सुखी जीवन और समाज का स्वास्थ कायम रखने के लिए आर्थिक समृध्दी आवश्यक है जिससे अपने परिवार की जीविका अच्छे से चला सके यही चीजे आवश्यक है अन्यथा आत्महत्या करने के सिवा कोई और पर्याय नही दिखाई देना है आरे समाज भी उसे कभी-कभी गलत साबित करता है।

किसानों की आत्महत्या करने के लिए अनेक कारणों की सुची दिखाई देती है। उस सुची को हम अगर जाँच पडताल करे तो मूल कारण पता चलता है। अर्थात मुख्य कारण कृषि के संदर्भ मे ही सन्निहित रहता है। उसका चित्त स्थिर नही रहता है। वह इस समस्याओं के ढेर में लगा रहता है वह उस समस्याओं के ढेर से छुटकारा पाना चाहता है। इसीलिए वह एकांणी विचार करने

लगता है। तथा वह आत्महत्या के विचार को अन्तिम अन्जाम देने का निर्णय लेता है। इसीलिए तथागत बुद्ध ने कहा है कि,

''फन्दनं चपलं चित्तं दुरक्खं दुन्निवारयं
उजु करोति मेधावी उसुकारो व तेजन''

अर्थात चित्त क्षणिक है। चंचल है, इसे रोक रखना कठिन है और इसे निवारण करना भी दुष्कर है। ऐसे चित्त को मेधावी पुरूष उसी प्रकार सीधा करता है, जेसे बाण बनानेवाला बाण को। परन्तु जो चित्त पर नियन्त्रण नही रख पाते वह क्षणिक, चंचल चित्त का आधीन होकर अपना जीवन नष्ट करता है।

इस प्रकार का चित्त जैसे जलाशय से निकालकर स्थल पर फेंक दी गई मछली तडफडाती है। उसी प्रकार किसान भी इन समस्याओं से बाहर निकलने के लिए तडफडाता है। पर उसका चित्त बहुत हल्के स्वभाव का है जो जहाँ चाहे वहा चला जाता है ऐसे चित्त का दमन करना कठिन होता है। इसलिए वह आत्महत्या करता है।

कृषक को समझ में नही आता की वह क्या। करे ? इन समस्याओं का हल केसे निकाले? परिवार के सदस्यों से भी इन समस्याओ पर बात करना अति आवश्यक होती है। पर इन सब बातों पर ध्यान न देकर वह एकांगी पक्ष का विचार करता है। वह समस्याओं से मुक्ती पाने के लिए वह आत्महत्या का विचार करने लगता है। ऐसे में जिसका चित्त स्थिर है, जो सद्सदविवेक बुद्धी से काम नही लेता, जिसका अपने आप पर विश्वास नही होता उसकी प्रज्ञा भी अपुर्ण है, वह ऐसे विचारों के आधीन होता है। उसे पता ही नही चलता की अब क्या करने वाला हुँ ऐसी अवस्था में वह आत्महत्या करता है।

परिवार भी इस सफर से गुजरता है तथा रिश्तेदार भी। परिवार इस घटना से पुरी तरह बिखर जाता है। परिवार के सदस्यों से बातचीत करते समय यह निदर्शन में आया की सावकार से

कर्ज लिया वह खेती और घर गिरवी रखकर। सावकार से घर या खेती छुडाने के लिए कृषक के पास किसी भी तरह का साधन या वित्त नही था। धम्मनपद के मूर्ख वर्ग में भगवान बुद्ध ने उपदेश दिया है, "जागनेवाले को रात लम्बी होती है। थके हुए के लिए रास्ता लम्बा होता है। अच्छे विचार को न जानने वाले के लिए संसार चक्र लम्बा होता है"।

किसान आत्महत्या करता है, परन्तु। उसके परिवार के सामने जीविका का बडा यक्ष प्रश्न होता है। क्योंकि कृषक घर का कुटुंबप्रमुख होता है। वही पुरे परिवार के जीविका की जिम्मेदारी उसी पर होती है। अगर ऐसी परिस्थिती में कृषक ने आत्महत्या की तो परिवार संकट में आता है।

व्यक्ती का व्यवसाय वह होना चाहिए जो उनकी आन्तरिक भावना के अनुरूप हो। वह व्यवसाय चाहे खेती हो या इसके अलावा दुसरा व्यवसाय जिसे उसके परिवार की जीविका हो सके अगर ऐसा होता है तो उसे व्यवसाय में रूचि होती है। उसका मन एवं हृदय वह व्यवसाय करने से चाहता है।

आज खेती व्यवसाय का कोई इतना मुल्य नही है। इसलिए डॉ. अम्बेडकर कहते थे कि "यदि प्रजातन्त्रिय आर्थिक ढांचा बनाना है और सबका कल्याण करना है तो परम्परागत मुल्योंन की समीक्षा कर केवल उन्ही मुल्यों को अपनाना चाहिए, जो आज उपयुक्त है और सबके लिए लाभप्रद है"।

डॉ. अम्बेडकर राज्य का स्वामित्व, केवल कृषि एवं मुख्य उद्योगो में होना चाहिए। वह जीवन बीमा आदि का राष्ट्रीयकरण भी चाहते थे। इसका अर्थ यह है कि राज्य की एक निश्चित पुंजी खेती एवं उद्योग में लगानी चाहिए जिससे समाज का परम्परावादी ढांचा शीघ्र बदल सके दीन-हीनों की दशा सुधारने के लिए डॉ. अम्बेडकर ने सुझाव दिया।

कृषक आर्थिक सुरक्षा बढाना चाहते हो तो राष्ट्रीयकरण की हुई बिमा कम्पनि एक निजी बिमा कम्पनि तुलना मे व्यरक्तीगत धन की सुरक्षा की गारन्टी अधिक देती है। राज्य बीमा कम्पनी

चाहे कैसी भी परिस्थितिया हो, धन लौटाने का पूरा उत्तरदायित्व लेती है इसमें व्यक्ति को किसी प्रकार का भय नही रहता है।

"राज्य बीमा कंपनी के व्दारा राज्य के पास भी एक निश्चित पुंजी आ जाति है, जिसे वह अपने औद्योगिक कार्यो में लगा सकता है। अन्यथा राज्य को खुले बाजार से पूंजी लेनी पडती है, जिसकी व्याज ही बहुत होती है। अत:राज्य को घाटा उठाना पडता है"।

इससे यह स्पष्ट है कि डॉ. अम्बेडकर इन दो उद्देश्यों को ध्यान में रखकर व्यक्तिगत धन की सुरक्षा बढाना चाहते थे। वह निजी संपत्ति को अधिक दृढ करना चाहते थे। इसलिए बिमा कंपनीयों1 का राष्ट्रीयकरण करना एवं राज्य दोनों के हित में है वस्तुत: भारत सरकार ने आंशिक रूप से बीमा कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण किया है लेकिन आवश्यकता पुर्ण राष्ट्रीयकरण की है। पुर्ण राष्ट्रीयकरण से ही व्यक्तियों की सुरक्षा का ध्यान रखा जा सकेगा।

कृषक के आर्थिक हितो को ध्यान में रखकर उनको आर्थिक सुरक्षा प्रदान करनी चाहिए तथा सुविधाएं भी प्रदान करनी चाहिए, जिससे आत्महत्या करने पर रोक लगे सके। जिस तरह आज कृषक आत्महत्या करने वाले कृषकों के आंकडो को देखा जाये तो दुर्भाग्यवश यह कहना पडेगा कि, दुनिया का अन्न दाता आत्महत्या कर रहा है। जो दुनिया को अन्न देता है उसी को भुखे रहने की नौबत आती है। इसीलिए उसकी मुलभूत आवश्यकताए पूरी नही होती है। इसलिए कृषक समस्या का शिकार बनाता है। साधन हीन कृषक का परिवार आर्थिक संकट में आता है। आज का दर्शन मानव समस्याओं को हल करने में बहुत व्यस्त है। डॉ अम्बेडकर का समाजदर्शन भी मनुष्य और समाज की वर्तमान समस्याओं का अध्ययन करता है और तदनुसार उनका समाधान ही बताता भी है। उनका दर्शन श्रमिको,कृषकों की स्थिति – कम वेतन, दोषपुर्ण वितरण, बहुमत का दबाव, अशिक्षा, अज्ञान, अत्याचार आदि समस्याओं के बारे मे पर्याप्त मात्रा में विचार करता है। उनके दर्शन का मुख्य उद्देश मानव-कष्टों का अन्त करना है। बुद्ध के दर्शन का उद्देश

महान है। डॉ. अम्बेकरने उनका ही अनुसरण किया और कहा कि दर्शन मानव-व्यहवहार के मापने की विधि के सिवाय और कुछ नही है।'

आत्महत्या प्रकरण का तपशिल दिनांक 01 मार्च 2014 (वर्धा)

क्र.	वर्ष	कुल किसान	पात्र	अपात्र	चौकशी के लिए प्रलंबित
1	जनवरी, 2013	8	4	4	0
2	फरवरी, 2013	13	6	6	1
3	मार्च, 2013	6	4	2	0
4	अप्रैल, 2013	7	6	1	0
5	मई, 2013	4	4	-	0
6	जुन, 2013	5	3	2	0
7	जुलाई, 2013	4	3	1	0
8	अगस्त, 2013	7	4	2	1
9	सितंबर, 2013	9	8	-	1
10	अक्टूबर, 2013	12	10	2	0
11	नवम्बर, 2013	16	13	1	2
12	दिसंबर, 2013	7	2	1	4
13	जनवरी, 2014	9	-	-	9
14	फरवरी, 2014	6	-	-	6
15	मार्च, 2014				
कुल 01/01/2013 से 01/03/2014		113	67	22	24

कुल आत्महत्या के प्रकरण 113 हैं, उसमें से 67 पात्र हैं, 22 अपात्र है तथा 24 जाँचपड़ताल के लिए प्रलंबित है।[1]

***

[1] जिलाधिकारी कार्यालय, वर्धा

द्वितीय-अध्याय

द्वितीय अध्याय

किसानों की आत्महत्या की स्थितियाँ

आज की तरह बुद्धकाल में भी भारतीय जनता का मुख्य व्यवसाय खेती (कृषी) था। परन्तु आज किसानों कि खेती में अच्छी फसल न होने के कारण हवालदिल होकर आत्महत्या करने का विचार करताहै और उसे अंजाय तक पहुँचाता है। किसानों की आत्म्हत्या होने के अनेक कारण हो सकते है। उसकी कारण मीमासा होना जरूरी है। कभी-कभी किसान अनेक परेशानियों से गुजरता है। किसान का मुख्य व्यवसाय खेती होने के कारण आत्महत्या। करने के अनेक कारणों का प्रभाव पडता है। वह निम्नलिखित है।

1. आर्थिक स्थिति :-

भारतीय किसानों का मुख्यत पेशा खेती है। अन्य व्यवसाय करने के लिए आर्थिक परेशानियों का सामना करना पडता है। यहाँ अनेक आर्थिक समस्या (पक्ष) का विश्लेनषण करना अनिवार्य है क्योंकि किसी भी किसान की आत्महत्या होती है तो उसमें आर्थिक पक्ष की बडी भुमिका होती है। वह अपना सारा समय रोटी-पानी की खोज में व्यतीत कर देता है। केवल जीवित रहने का उद्देश मनुष्य को अपनी जीविका कमाने तक ही सीमित रख सकता है। अत: उसे उस कार्य के लिए समय नहीं मिलता, जिसके द्वारा वह अपनी बुद्धि का ठीक-ठीक विकास कर सके। अपने जीवन को सुसस्कृंत बना सके। ऐसा जीवन अवकाश के बिना सम्भव नहीं हो सकता। इसलिए आधुनिक समाज के समक्ष यही एक बिकट समस्या है कि प्रत्येक व्यक्ति को किस प्रकार श्रम का समय (अवकाश) प्रदान किया जाये, ताकि वह अपनी जीविका कमाने के साथ-साथ सांस्कृतिक उन्नति के द्वारा अपने जीवन को आनन्दमय बना सके। बल्कि ऐसा न होने कारण किसान आत्महत्या करने के विचार मन में लाकर उसी पर अंमल करता है। परिवार के उदर

निर्वाह की संपुर्ण जिम्मेदारी कुटुंब प्रमुख होने के नाते किसान पर हो जाती है। साथ ही साथ बच्चों की शिक्षा का खर्चा उसी पर रहता है। बाद में शादीयों पर भी खर्च करना पडता है। इन सब चीजों के लिए आर्थिक पक्ष सक्षम होना जरूरी होता है, परन्तु यही किसान मार खाता है। इन सभी समस्याओं पर हल निकालने के लिए वह सावकार का कर्जा (ऋण) लेता है। अच्छी फसल होने के बाद ऋण चुकता करने की है, उसी के आधार पर वह कर्जा लेता है। बँक का भी ऋण चुकता करने का सोचता है, उसी के आधार पर वह कर्जा लेता है। बँक का भी ऋण लेता है। इसी आशा पर इस साल अच्छी फसल हो जायेगी तो पुरा कर्जा चुका देंगे। परन्तु कभी-कभी अतिवृष्टि, अवर्षन के कारण कर्जा और बढ जाता है। बँक का कर्जा चुकता न करने कारण दुबारा बँक से कर्जा नहीं मिल पाता है सावकार का भी कर्जा चुकता न करने के कारण उसी से भी दोबारा कर्जा मिलने की उम्मीद खत्म, हो जाती है। आर्थिक स्त्रोत के सभी मार्ग बंद हो जाते है। ऐसे में किसान आत्महत्या करने की ठान लेता है और वह निराश होकर आत्महत्या करता है। अपना जीवन भ्रष्ट करता है। इसके पीछे एक ही कारण होता है आर्थिक पक्ष या समस्या। किसान का मुल आर्थिक स्त्रोत खेती है, अन्य व्यवसाय करने के लिए भी आर्थिक पक्ष की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दुसरा व्यवसाय खडा करने के लिए आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है। किसान सशक्त न होने की वजह से व्यवसाय का विचार मन में ही रह जाता है और उनके मन में बुरे विचार आने लगते है और उसे अंजाम भी देता है। क्योंकि परिस्थिति उनके अनुरूप नहीं होती है।[1]

2. सामाजिक स्थिति :-

किसान का वास्तविक स्त्रोत कृषि है। उसकी सामाजिक स्थिति भी निम्न स्तर की होती है। इस स्थिति में परिवर्तन जो कि जीवन का मुलाधार है, परन्तु सम्भाव नहीं इसलिए किसान के

---

[1] डॉ. अम्बेडकर का समाजदर्शन, डी.आर.नाटव, पृ. 81

कल्यारण में सहाय्यक सिद्ध नहीं होती। कभी-कभी सामाजिक कारणों से भी किसान मानसिक तणाव में आकर आत्महत्या करता है। किसान और उसके परिवार के किसी सदस्य ने कोई गलत कार्य किया हो तो उसे समाज बहिष्कृत करता है। उन्हें समाज के रितीरिवाज, परम्परा का पालन करता होता है। समाज में ऐसे नियम बनाये गये है जो उसका उल्लंघन करेगा तो उसे समाज से बहिष्कृत किया जाता है। समाज को अलिखित नियम, रितीरिवाज, परम्परा जो मानव कल्याण के लिए सिद्ध नहीं होती उसे ही मानना पडता है अगर कोई उसका उल्लंघन करता है तो उस पर मानसिक दबाव डाला जाता है। जो कि उन्हें यह अमान्य होता है। इसी वजह से किसान की सामाजिक स्थिति पर असर पडता है। समाज के चौकट (frame) के बाहर जाकर कोई नीच कार्य किया तो उसके सामाजिक स्थिति पर प्रभाव पडता है। समाज उसे और उसके परिवार पर मानसिक दबाव डालता है।

यह स्पष्ट है कि कोई भी व्यक्ति समाज के बाहर नहीं रहना चाहता है क्योंकि मनुष्य समाजशील प्राणी है। उसे समाज मे ही रहना पडता है। ऐसी परिस्थिति में कोई ऊँचा-नीचा हो गया तो समाज उन्हें समाज से बाहर फेंक देते है। ऐसे में पुरा परिवार इस समस्या का शिकार होता है। परिवार का कुटुंब प्रमुख पर ज्यादा मानसिक दबाव आता है। ऐसी स्थिति में वह अपने मन में आत्महत्या का विचार से प्रवृत्त होता है, वह आत्महत्या करता है।

इसलिए डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि से किसान की सामाजिक स्थिति आर्थिक संस्था के रूप में असफल ही नहीं वरन् एक हानिकारक संस्था सिद्ध हुई है। कारण यह हे कि इसमें व्यक्ति की स्वेच्छा का हनन किया जाता है और उसके प्राकृतिक गुणों को सामाजिक नियमों के अधिन बना दिया जाता है। फलत: व्याक्ति अपना व्यक्तित्व खो बैठता है। व्यवसाय के आधार पर समाज में ऊँचा-नीचा स्थान दिया जाता है। यहाँ तक कि ऊँचा-नीचा पारिवारिक सम्पत्ति के रूप में समझी जाती है। इसलिए सामाजिक स्थिति समाज का सबसे बडा दोष है। ‘‘सार्वजनिक सुरक्षा का संबंध

किया जा सके जो कि उन किसानों को संरक्षण मिले जो गरीब, दुर्बल, वृद्ध है। परन्तु भारतीय समाज में आर्थिक ढाँचे उन शक्तिशाली लोगों के हाथों में छोड दिये है जो अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को नहीं निभाते है जिसकी आज अत्याधिक आवश्यकता है।[1]

3. धार्मिक स्थिति :-

समाज अनेक मान्यता प्राप्त धार्मिक परम्पराये अस्तित्व में है। एक प्रकार से उन्हें अलिखित नियम माने जाते है। ऐसे अलिखित नियम या समाज प्राप्त मान्यताओं का पालन किया जाता है। जैसे-यज्ञ करना, यह धार्मिक कृत्य माना जाता है। व्रतवैकल्यत करना, जप-जाप्य करना, धार्मिक संस्कांर करना आवश्यक माना जाता है। यह धार्मिक संस्कार करने के लिए किसान के पास आर्थिक पक्ष सशक्त होता भी जरूरी होता है। दुर्भाग्यसवश उनका आर्थिक पक्ष सक्षम नहीं होता है। इसीलिए वह धार्मिक कार्य को अच्छे से नहीं कर पाता है। उसके सामने आर्थिक समस्या उत्पमन्न होती है। कोई भी कार्य करने के लिए आर्थिक पक्ष का मजबूत होना अत्यावश्यक है। साधनहीन किसान के पास धार्मिक कार्य करने के लिए आर्थिक परेशानी होती है। ऐसे में वह किसान मानसिक तणाव में रहने लगता है। उसके मन से एक ही विचार आता है वह आत्महत्या करने का। इस विचार को प्रबल करने के लिए वह प्रवृत्त होता है और एक दिन आत्महत्या करता है। इसके पीछे आर्थिक समस्याय की सबसे बडी भुमिका होती है। क्योंकि आर्थिक समस्या से ही अन्य समस्याएँ उत्पन्न होती है।

‘‘सामाजिक जीवन में अनेक भयंकर घटनाएँ सामने आती है। प्राचीन रीति रिवाज उनका समाधान करने के लिए निरर्थक सिद्ध होते है।’’[2] अर्थात उनका निराकरण पुरानी परम्पराओं एवं आदतों में नहीं मिलता। कभी-कभी तो मनुष्य के सामने नये मार्ग भी नहीं होते है।

---

[1] डॉ. अम्बेडकर का समाजदर्शन, डी.आर.नाटव, पृ. 85

[2] वहीं-पृ.140

अत: समाज की गति बहुत मन्द हो जाती है। और समाज में अप्रगतिशील तत्वों की बहुतायत हो जाती है। डॉ. आंबेडकर ने कार्लाइल की बात को यहाँ उदधृत किया ''किसी भी समय को नष्ट होने की आवश्यकता नही, यदि इसे महान व्यक्ति मिल जाये ऐसा व्यक्ति, जो अच्छा एवं बुद्धिमान हो, उसमें यह जानने की बुद्धि हो कि समय क्या चाहता है। उसमें इतनी शक्ति हो कि उसे ठीक-ठीक रास्ते पर ले जाये। किसी समय की मुक्ति के लिए यही मुख्य तत्व है।''कार्लाइल की ओर से यह एक उपयुक्त उत्तर उन लोगों के लिए है, जो इतिहास के निर्माण में मनुष्य का कोई स्थान नहीं मानते।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार बुद्ध ने भी ढाई हजार वर्ष पुर्व यह बात समाज के सामने रखी थी। आज भी उनका महत्व कम नहीं हुआ है। सभी उसे सत्य मानते है। बुद्ध ने कहा है ''संसार में दु:ख है।''3 हालांकि उनके दर्शन में अप्राकृतिक घटनाओं के लिए कोई स्थान नहीं है। बुद्ध ने जीवन के वास्तविक तत्वों पर अपना ध्यान केद्रिंत किया कि ''मानव जीवन में दु:ख है।'' बुद्ध ने भौतिक एवं मानसिक दोनों दु:खों का अन्त करने पर बल दिया है।

धार्मिक कार्य के नाम पर अनेक कर्मकांड किये जाते है। जैसे-यज्ञ में पशू बलि देना। पुर्वजन्म के कर्मों के कारण शुभ या अशुभ कर्म करना। जो कि अंधविश्वास है। इन्हीं कारणों की वजह से वह धार्मिक कर्मकांड करने के लिए उसे आर्थिक समस्या आती है। इसलिए कभी कभी इनकी वजह से भी निराश होकर आत्महत्या। करता है। जब कि बौद्ध धर्म में इन कर्मकांड के लिए कोई स्थान नहीं है।

4. परिवारिक स्थिति :-

कभी-कभी परिवारिक कलह के वजह से किसान आत्महत्या करता है। खेती मुख्य व्यवसाय होने के कारण पुरा परिवार इस व्यवसाय पर निर्भर रहता है। परिवार में बच्चों का शिक्षण, शादी-विवाह, उदरनिर्वाह, धार्मिक संस्कार करने के लिए आर्थिक समस्या आती है। इन

कारणवश परिवार में कलह निर्माण होता है। इन कार्यो के लिए आर्थिक पक्ष सक्षम होता अत्यावश्यक है। परंतु मूल आर्थिक स्त्रोत केवल खेती होने से उर्वरित कार्यों की पुर्ती नहीं होती है। कभी कभी अतिवृष्टी के तो कभी अवर्षण तो कभी ओले की वजह से फसल नहीं होती है।

परिवार में किसान कुटुंब प्रमुख होता है। उसी पर पुरे परिवार की जिम्मेदारी होती है। वह उस जिम्मेदारी को निभाने के लिए असमर्थ रहता है। ऐसी परिस्थितियों में किसान का मानसिक संतुलन बिगड जाता हे और वह आत्महत्या करने की सोचता है और वह एक दिन आत्महत्या करता है। बुद्ध ने कहा है कि मनुष्य को जिसकी आवश्यकता है उसे वह राजा ने प्रदान करना चाहिऐ- जैसे 'कृषक को बीज' देना चाहिए।[1] "नौकरी करनेवालों को पगार वेतन भत्ता देना''चाहिए

5. कुटदन्त सुत्त :-

बुद्ध काल में ब्राह्मणी धर्म यज्ञों पर निर्भर करता था। कुछ यज्ञ 'नित्य' कहलाते थे और कुछ यज्ञ 'नैतिक' कहलाते थे। 'नित्य'[2] यज्ञ का मतलब था वे अनिवार्य कर्तव्य जो चाहे कोई फल मिले और चाहे न मिले पर इसे करना आवश्यक समझा जाता था और उस प्रकार के यज्ञ को करना ही पडते थे।

'नैमित्तिक'यज्ञ उस समय किये जाते थे जब यजमान किसी सांसरिक इच्छा विशेष की पूर्ति के लिए उसके निमित्त से वह यज्ञ कराता था। ब्राह्मणी यज्ञों में सुरा-पान पशुओं की बलि और आमोद प्रमोद रहता था। तब भी ये यज्ञ 'धार्मिक कृत्य' समझे जाते थे। ऐसे धर्म जिसका आधार यज्ञ थे बुद्ध ने अपनाने योग्य नहीं समझा।

[1] दिघनिकाय, हिन्दी अनुवादक, राहुल सांकृत्यायन, जगदीश काश्यप, पृष्ठ 119

[2] बुद्ध और उनका बद्ध धम्म (हिन्दी अनुवादक) भदंन आनंद कौशल्याबयन, पृ. 233

आज की तरह बुद्ध-काल में भी भारतीय जनता का मुख्य पेशा कृषि था। बुद्ध काल में ब्राह्मण भी खेती करते थे। कृषि-कर्म (कसि कम्म) उस समय किसी जाति विशेष का पेशा नहीं माना जाता था। हम मगध के एकनाला ब्राह्मण ग्राम के कसिभारद्वाज ब्राह्मण को 500 हल लेकर जुताई करवाते देखते है।[1] मज्झिम निकाय के गोपक-मोग्गल्लायन-सुत्तन्त से हम जानते है कि मगध का गोपक-मोग्गल्लायन ब्राह्मण भी कृषक था। पिप्पलि माणवक (बाद में स्थविर महाकाश्यप) के यहाँ भी खेती होती थी। बुद्धकाल में छोटे-छोटे भुमि के टुकड़ो पर अलग-अलग परिवार खेती करते थे।

एक समय भगवान पाँच सौ भिक्खू संघ के साथ खाणूमत नामक मगध का ब्राहमण ग्राम था, वहा गये और खाणुमत में अम्बलट्ठिका (आम्रयष्टिका) विहार कर रहे थे। उस समय कुटदन्त ब्राम्हण मगध का था। वह धन-धान्य संपन्न, सोना-चांदी से संपन्न था तो उस समय उसके मन में विचार आया कि मैं महायज्ञ करूँ। ‘‘महायज्ञ में बलि देने के लिए सात सौ बैल, सात सौ बछडे, सात सौ बछडियाँ, सात सौ भेडे खंभे पर लाई गई थी।[2]

खाणमुत-वासी ब्राह्मण गृहस्थों ने सुना कि शाक्य कुल से प्रव्रजित शाक्य पुत्र श्रमण गौतम अम्बलट्ठिका में विहार कर रहे है। ‘‘श्रमण गौतम का ऐसा मंडाल किर्ती चारों ओर है। वह अर्हत3 है उनका दर्शन करना अच्छा होता है तो वे सब खाणुमत ब्राह्मण गृहस्थ जहा भगवान थे वहाँ गएल गे। उस समय कुटदन्त ब्राह्मण गृहस्थ अम्बालट्ठिका में जाते देखा देखकर क्षत्ता (सचिव) को कहा- क्या; है, हे क्षत्ता खाणमुत ब्राह्मण अम्बालट्ठिका जा रहे है।’’ उनके सचिव ने कहा कि ‘‘शाक्य कुल से प्रव्रजित श्रमण गौतम अम्बलट्ठिका में विहार कर रहे है। (श्रवमण गौतम) की जिसकी मंगलकीर्ति फैली है। उन्हीं श्रमण गौतम को दर्शनार्थ जा रहे है।’’ तब कुटदन्त ब्राह्मण को

[1] मजिझम निकाय हिन्दी अनुवाद, पृ-489

[2] दिधनिकाय, भिक्खु राहुल सांकृत्यायन, जगदीश काश्यप-पृ-116

ज्ञात हुआ कि श्रमण गौतम सोलह परिष्कारों वाली त्रिविध यज्ञ-सम्पदा (=यज्ञविधि) को जानता है, तो श्रमण गौतम से ही यज्ञ-सम्पदा के बारे में पुछ लेता हुँ। तब कुटदन्त ब्राह्मण गृहस्थ् के साथ श्रमण गौतम के दर्शनार्थ हम सब जाएँगे।

उस समय कई सौ ब्राह्मण कुटदन्त के यज्ञ का उपभोग करने के लिए खाणुमत में वास करते थे। उन ब्राह्मणों ने सुना कि कुटदन्त ब्राह्मण श्रमण गौतम के दर्शनार्थ जा रहा है। यह उचित नहीं बल्कि श्रमण गौतम ने ही कुटदन्त के दर्शनार्थ आना चाहिए क्योंकि कुटदन्त वृद्ध है, बिम्बिसार से संस्कृत है, मानित पुजित है और खाणुमत के स्वामी है और श्रमण गौतम तरूण साधू है इसीलिए ‘‘श्रमण गौतम ही आपके दर्शनार्थ आने योग्य है”।[1]

तब कुटदन्त ब्राह्मण ने श्रमण गौतम की प्रशंसा कि ‘‘शीलवान आर्यशीलयुक्त कुशल शील से युक्त है।’’ श्रमण गौतम सुवक्ता और कल्याण और मानव कल्याण की ही बात करता है। श्रमण गौतम काम राग रहित, चंचलता रहित है।[2] श्रमण गौतम इतने ही गुणवाले नहीं है वह अपरिणाम गुण वाले है। कुटदन्त ब्राह्मण बुद्ध की प्रशंसा कर रहे थे। उसके बाद कुटदन्त ब्राह्मण अन्य ब्राह्मण गण के साथ श्रमण गौतम के पास गये।

कुटदन्तण ब्राह्मण और खाणुमत के ब्राह्मण गृहस्थों ने अभिवादन करें एक ओर बैठ गये। तब कुटदन्त ब्राह्मण ने भगवान से कहा- ‘‘हे गौतम। आप सोलह परिष्कारों सहित त्रिविध यस सम्पदा को नहीं जानता। मै महायज्ञ करना चाहता हुँ। अच्छा हो यदि आप गौतम सोलह परिष्कारोसहित सहित त्रिविध यज्ञ-सम्पदा का मुझे उपदेश करें।’’ तब भगवान ने अहिंसामय यज्ञ करने के लिए महाविजित राजा की जातक कथा सुनायी।

---

[1] दिधनिकाय, भिक्खु राहुल सांकृत्यायन, जगदीश काश्यप-पृ-116

[2] वहीं- पृ- 116

‘‘पुर्वकाल में महाविजित नामक राजा था। बडा प्रतापी धनवान, सोना चांदी वाला, बहुत वित्त, (साधनवाला), महाधनी, धन धान्य से भरे खजा़ने से और कोठे अनाज से भरे थे। राजा एकान्त में थे। उनके मन में विचार आया कि, मुझे सभी प्रकार के लोग प्राप्त है, मैंने पृथ्वी मंडल को जीतकर, शासन करता हूँ। क्यों न मै महायज्ञ करुँ जो कि चिरकाल तक मेरे हित सुख के लिए हो।’’ यह बात महाविजित राजाने अपने पुरोहित से कहीं तब पुरोहित ने राजा से कहा कि आप का देश संकट में है, पीडा सहित है। राज्य में, गाँवों में डाकू लुट और बटमारी करते है।’’ इस समय आपकी प्रजा हैरान कि जा रही है और लुटी जा रही है। जिन्होंने रास्ते अरसुक्षित कर दिये है। जब तक ऐसी अवस्था है तब तक यदि महाराज ने प्रजा पर एक नया कर लगाया तो महाराज वह निश्चय गलती होती।

‘‘लेकिन हो सकता है कि महाराज आप यह सोचेकि मैं शीघ्र ही उन डाकुओं की सब कारवाईयाँ रोक दुँगा, उनको पकडवा लुंगा, उन पर जुर्माने करुँगा, उनको देश से निकलवा दुंगा तथा उनको मरवा डालुंगा। लेकिन इस तरह से उनकी दुष्टता नहीं रोकी जा सकती। जो इससे बचेंगे, अदण्डित रहेंगे वे प्रजा को हैराण करते रहेंगे।’’

इस समस्या का मल समाप्ति करने का एक मार्ग है। ‘‘आपके राज्यो में जो लोग पशू पालते है या खेती करते है, उन्हें महाराज। आप खाने के लिए अनाज दे और कृषि में बीज बोने के लिए बीज दे। आपके राज्य में जितने भी लोग व्यापार करते है, उन्हें महाराज। अनुदान ऋण/पुँजी दे। आपके राज्य में जितने भी ऐसे लोग है जो सरकारी कर्मचारी है, उन्हें महाराज वेतन और भोजन दे।’’[1] इसलिए महाराज सब अपने काम में लगे रहेंगे तो वे देश में उत्पात नहीं मचायेंगे, राजा को राज्य कर से अधिक आय होने लगेगी, देश सुख और शांति से रहने लगेंगे और जनता खुश हाल हो जायेगी जनता शांति का अनुभव करेगी, ऐसी स्थिति में लोग अपने बच्चों को गोद में लेकर

[1] दिधनिकाय, भिक्खु राहुल सांकृत्यायन, जगदीश काश्यप-पृ-119

नाचेंगे और निर्भय होकर खुले दरवाजे सोयेंगे।'' तब हे ब्राह्मण! राजा महा विजेता ने अपने पुरोहित की बात मानकर वैसा ही किया। लोग अपने-अपने काम में लग गये। उन्होंने देश में उत्पात मचाना छोड दिया। राजा को राज्य कर से अधिक आय होने लगी। देश सुख और शान्ति से रहने लगे। जनता खूशहाल हो गई। लोग अपने-अपने बच्चों। को गोद में लेकर नाचने लगे और निर्भय होकर खुले दरवाजे सोने लगे।

जब उत्पात शान्त हो गया, तो राजा महाविजेता ने फिर से अपने पुरोहित से कहा- ''अब देश में उत्पात नही है। जनता खुश-हाल है तो मैं अपने चिरकाल हित सुख के लिए वह महान यज्ञ करना चाहता हुँ आप बताये कि कैसे करुँ?' तो पुरोहित ने राजा को उत्तर देते हुए कहा ''राजन! अब यज्ञ करने का उचित समय है। अब आप राजधानी और राजधानी के बाहर समस्त देश में ऐसे जितने भी क्षत्रिय हो जो आपके माल गुजार हो, उन्हें नियंत्रण दे, जो मंत्री हो, राज्य के अधिकारी हो, या प्रतिष्ठित ब्राह्मण हो, जो सम्पंन्न, गृहपति हो उन सब को निमंत्रण भेजे और कहे मैं अपने दीर्घकालीन कल्याण के लिए यज्ञ करना चाहता हुँ। आप उसकी स्वीकृति दे।'' तब हे कुटदन्त ब्राह्मण। जैसा पुरोहित ने कहा वैसा हि राजा ने किया और उन सभी लोगों ने भी यज्ञ करने की अनुमति दी।

राजा महाविजेता बुद्धीमान था और अनेक बातों में कुशलता उसका पुरोहित भी वैसा ही बुद्धीमान और अनेक बातों में कुशल था। इसलिए पुरोहित ने राजा को पहले ही बता दिया था कि इस यज्ञ में कितना धन व्यय हो सकता है। पुरोहित ने कहा ''महाराज कही ऐसा न हो कि यज्ञ आरम्भ होने से पुर्व, या यज्ञ करते समय अथवा यज्ञ समाप्ती होने के अनन्तर आपके मन में यह विचार उत्पन्न हो कि 'अरे! इस यज्ञ में तो मेरी सम्पत्ति का बडा हिस्सा लग गया तो जो ऐसा विचार मन में नहींआना चाहिए''और हे ब्राह्मण। उस पुरोहित ने यज्ञ आरम्भर होने से ही पहले या बाद में राजा के मन में यज्ञ में भाग लेने वालों को लेकर कोई पश्चाताप न हो'' इसलिए राजा को

कहा ''राजन! आपके यज्ञ में हर तरह के लाग आयेंगे ऐसी भी जो जीव–हत्याप करते है, ऐसी भी जीव-हत्या नहीं करते। ऐसे भी जो चोरीम करते है, ऐसी भी जो चोरी नहीं करते। ऐसे भी जो मिथ्याऐचारम करते है, और ऐसे भी जो नहीं करते। ऐसे भी जो झुठ बोलते है, ऐसी भी जो झुठ नहीं बोलते। ऐसे भी जो झुठी चुगली खाते है, ऐसी भी जो झुठी चुगली नहीं खाते। ऐसे भी जो कठोर बोलते है, ऐसे भी जो कठोर नहीं बोलते। ऐसे भी जो व्यहर्थ बकवाद करते है, ऐसी भी जो व्योर्थ बकवाद नहीं करते, ऐसे भी जो लोभ करते है, ऐसे भी जो लोभ नहीं करते, ऐसे भी जो द्वेष करते है, ऐसी भी जो द्वेष नहीं करते।

हे ब्राम्हटण! यदि आप कोई ऐसा ही यज्ञ करना चाहते है, तो आपका 'यज्ञ'कभी धर्म का अग्र हो ही नही सकते।यह धर्म था निकृष्टमतय रूप हे जो कहता है कि पशुओं की बलि देने से आदमी स्वृर्ग जा सकते है।''

तब बुटदन्तद ब्राम्हमण ने प्रश्न किया '' हे गौतम! तो क्या कोई दुसरा 'यंज्ञ'है जिसमे प्राणियों कि पशूओं कि बालि तो न देनी पडे परन्तुद जिसके करने से अधिक फल मिले और दीर्घकालीन हित सुख (कल्यासन) के लिए तब भगवान बुद्ध ने कहा कि हाँ जेसा यंज्ञ है।''तब भगवान बुद्ध ने कहा कि'' हाँ ऐसा यज्ञ है।''कुटदनी ब्राम्ह ण ने बुद्ध को ऐसा यज्ञं कैसे क्याँ होगा?

भगवान बुद्ध ने यज्ञ महाफलदायी और अल्पणसामग्री का दान यज्ञ बताया। वेसे बुद्ध ने इस कुटदन्तब सुत्त मे छह प्रकारे के अल्पुसाम्रगी और महाफलदायी बताया है,जो दीर्घकाल तक कल्याणकारी होने है। इसमें से पहजा यज्ञ है

1.दान यज्ञ:-

जो आदमी सादाचारी शीलवान शीलवान प्रवृजितभिक्खूओं को नित्यस दान देता है। वह यज्ञ महाफलदायी होता है।'' जो विहार को बनवाता है और भिक्खूव संघ को दान देना है। इससे भी अल्पतसामग्री वाला यज्ञ है।

2.त्रिशरण यज्ञ :-

जो आदमी बुद्ध, धम्म- तथा संघ को शरण जाता है वह यज्ञ त्रिविध यज्ञ से भी महाफलदायी और चित्रकाल तक रहना है।'' यह यज्ञ अल्प सामग्री कियाशील ओर महायाहात्भ्पान है।

3.शिक्षाप्रद-

यज्ञ :इस यज्ञ में मनुष्यों के शिक्षा के बारे में कहा है जो महाफलदायी है। जब एक आदमी श्राद्धयुक्तय होकर -

1 जीव-हत्या से विरत रहने का संकल्पे करता है

2 चोरीकरने से विरन रहने का संकल्प करता है।

3 झुठ बोलने से विरन रहने का संकल्पल करताहै मद्दापान तथा नशीली चीजों के सवेन से विरत रहने का संकल्पस करता है'' यह ऐसा यज्ञ है जो यज्ञोंके निमित बडे खर्चे करने से अच्छा है जो यज्ञों के निर्मित बडे खर्चे करने से अच्छा है जो भिकयूओं के ठहरने लिए विहार आदि बनवाने से भी जो निरन्त र भिक्षा देते रहने से भी अच्छा है, जो त्रिशरण ग्रहण करने से भी अच्छा है।

4 शील यज्ञ :-

जब इस लोक (संसार) में तथागत उत्पिन्न होते है तो अन्या लोग भी शीलवान होते है। इसके लिए किसी सामग्री की आवश्यीकता नही है। क्योंकि जहाँ तथागत होने है वहाँ शीलवान लोग होते है। शील को ग्रहण करने वाले लोग होते है।

1.आम्भिक शील:-

वह प्रव्रजित हो प्रतिमोक्ष के नियमों का ठीक से पालन करते हुए विहार करता है, आचार-गोचार के सहित हो, छोटे से भी पाप से डरने वाला काय और वचन कर्म से संयुक्तक,

शद्ध जीविका करते,शीलसम्पमत्र,इद्रिय-संयमी, भोजन की मात्रा जानने वाला, स्मृ-तिमान, सावधान और संतुष्ट् रहता है।

महाराज! भिक्खुर कैसे शीलसम्पत्र होता है?

1.महाराज! भिक्खुत हिंसा को छोड़ हिंसा से विरत होता है, दण्ड को छोड़, शस्त्र को छोड,लज्जास लज्जा (पाप कम्मोंक) से मुक्तत, दयासम्प्त्र, सभी प्राणियोंके हित की कामना से युक्तस हो विहार करता है। यह भी शील है।

2. चोरी को छोड़ चोरी से विरत रहता है, किसी की कुछ दी गई वस्तु ही को ग्रहण करता है, किसीकी कुछ दी गई वस्तु। ही की अभिलाषा करता है। इस प्रकार वह पवित्रजनहोक विहार करता है। यह भी शील है।

3. अब्रहाचर्य को छोड़ ब्रहाचारी रहता है, मैथुन कर्म से विरत और दूर रहता है। यह भी शील है।

4. मिथ्याथभाषण को छोड़, मिथ्या भाषण से विरत रहता है, सत्यीवादी, सत्यमसन्धा,स्थिर विश्वयसैनीय और यथार्थ वक्ता होता है। भी शील है।

5. चुगली खाना छोड़ चुगली खाने से विरत रहता है लोगों में लडा़ई करावाने के लिए यहा से सुनकर वहां नही कहता है और वहाँ से सनुकर यहां नहीं कहता।वह फूटे हुऐ लोगों का मिलाने वाला, मिले हुए लोगोंमें और अधिक मिल कराने वाला, मेल चाहने वाला, मेल (के काम) में लगा हुआ (और) मेल में प्रसत्र हाने वाला, मेल करनेकी बात का बोलने वाला होता है। भी शील है

6. कठोर वचनय को छोड़े कठोर को वचन से विरत रहता है। जो बात निदोंष, कर्णप्रिय, प्रमयुक्तम मन में लगने वाली, सभ्यल,तथा लोंगोंको प्रिय है, उसी प्रकार की बातों का कहने वाला होता है। यह भी शील है।

7. व्यर्थ वकवाद को छोड़ व्यर्थ की बकवाद से विरत रहता है। समयोचित बात बोलने वाला, ठीक बात बोलने वाला,सार्थक बात बोलनेबाला, धर्मकी बात बोलने वाला,विनय की बात बोलने वाला, जंचने वाली बात बोलने वाली होती है। समय और अवस्था के अनुकूल विभागकर सार्थक बात बोलने वाला होता है। यह भी शील है।

8. बीजों और जीवों के नाशकरने को छोड़ बीजों और जीवों के नाश करने से विरत रहता है।

9. दिन में एक बार ही भोजन करनेवाला होता है, विकाल (-मध्याह के बाद) भोजन से विरत रहता है।

10. नृत्यह, गीत, बाजा,और बुरे प्रदर्शन से विरत रहता है।

11. ऊंची और सजी-धजी शय्या से विरत रहता है।

12. सोने चांदी के छूने से विरत रहता है।

13. कच्चा अन्नब

14. मांस.

15. स्त्री और कुमारी के स्वीकार करने

16 दासी और दास के

17. भेड़-बकरी

18. मुर्गी, सूअर

19. हाथी, गाय, घोड़ा

20. खेत, माल-असबाब के स्वीकार

21. दूत के काम करने

22. क्रय-विक्रय।

23. नाप-तराजू बटखरों में ठगबनीजी करने

24. घूस लेने,ठगने, और नकली सोना चांदी बनाने

25 हाथ पैर काटने, मारने बांधने, लूटने और डांका डालने से विरत होता यह भी शील है।

2. मध्यम शील :-

'महाराज ! अथवा अनाड़ी मेरी प्रशंसा इस प्रकार करते हैं- जिस तरह कितने श्रमण और ब्राम्हाशण (गृहस्थों के व्दा रा) श्रद्धापूर्वक दिए गए भोजन को खाकर इस प्रकार के सभ बीजों और सभी प्राणियों के नाश में लगे रहते हैं,जैसे-मूलबीज (=जिनका उगना मूल से होता है), स्कपन्ध बीज (जिनका प्ररोह गांठ से होता है, जैसे-ईख), फलबीज और पांचवी अग्रबीज (उगता पोधा), उस प्रकार श्रमण गौतम बीजो और प्राणियों का नाश नहीं करता।

'महाराज ! अथवा – जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राम्हंण इस प्रकार के जोड़ने और बटोरने मे लगे रहते हैं, जैसे-अत्र पान,वस्त्रप, वाहन, शय्या, गन्धब तथा और भी वैसी ही दूसरी चीजों का इकट्ठा करना, उस प्रकार श्रमण गौतम जोड़ने और बटोरने मे नहीं लगा रहते। 'महाराज! अथवा जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राहाण इस प्रकार के अनुचित दर्शन में लगे रहते हैं, जैसे-नृत्यर, गीत, बाजा, नाटक, लीला, ताली, ताल देना, घड़े पर तबला बजाना, गीत-मण्डणली, लोहे की गोली का खेल, बांस का खेल, धोंपन' हस्ति-युद्ध, अश्वड-युद्ध,वृषभ-युद्ध, बकरोंका युद्ध, भेडों का युद्ध, मुर्गों का लड़ाना बत्तनक का लड़ाना लाठी का खेल, मुष्टि-युद्ध, कुश्ती, मारपीट का खेज, सेना, लडा़ई की चालें इत्यावदि उस प्रकार श्रमण गौतम अनुचित दर्शन में नहीं लगते।

'महाराज! अथवा-जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राहाण जुआ आदि खेलों के नशे में लगे रहते है-''जैसेअष्टापद, दशपद, आकाश, परिहारपथ, सत्रिक, खलिक, घटिक सलाक-हस्त-, अक्ष, पंगचिर, वंकक, मोक्खंचिक, चिलिंगुलिक, पतताल्हाहक, रथ की दीड, तोर चलाने की

बाजी, बुझाअल, और नकल, उस प्रकार श्रमणगौतम जुआ आदि खेलों के नशे में नही पडते। ‘महाराज! अथवा – जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राहाण इस तरह की ऊंची और ठाट-बाट की शय्या पर सोते हैं, जैसे-दीघ्र-आसन, फ्लंग, बड़े-बड़े रोएं वाला आसन, चित्रित आसन, झालरदार आसन, काम कि हुआ आसन, लम्बीड दरी, हाथी का साज, घोडेका साज,रथ का साज, कदलिमृग की खाल का बना आसन, चंदवादार आसन, दोनों ओर तकिया रखा हुआ(आसन) इत्यादी, उस प्रकार श्रमण गोतम ऊंची और ठांट-बाट की शय्या पर नहीं सोते। ‘’महाराज! अथवा– जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राहाण इस प्रकार वे सजने धजने मे ले रहते हैं, जैसे-उबटन लगवाना, शरीर को मलवाना, दूसरे के हाथ नहाना,शरीर दबवाना, ऐना, अंजन, माला, लेप, मुख-चूर्ण (=पाउडर), मुख-लेपन, हाथ के आभूषण शिखा का आभूषण छडी, तलवार, छाता, सुन्दुर जूता, टोपी, मणि, चंबर, लम्बेउ-लम्बु झालर वाले साफ उजले कपडे इत्या,दी,उस प्रकार श्रमण गोतम अपनेकोसजाने-धजाने मे नहीं लगा रहते।

‘महाराज! अथवा – जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राहाण इस प्रकार की (=तिरश्चीथन=तिरछी) कथा में लगे रहते हैं, जैसें-राजकथा, चोर, महामंत्री, सेना, भय, युद्ध, अत्र, पान, वस्त्रप, शय्या, माला, जाति, रथ, ग्राम, निगम, नगर, जनपद, स्त्री्, शूर, चोरस्ताब (=विशिखा), पनघट, और भूत-प्रेत की कथाएं, संसार की विविध घटनाएं, सामुद्रिक घटनाएं तथा इसी तरह की इधर-उधर की जनक्षुतियां उस प्रकार श्रमण गौतम तिरश्ची न कथाओंमे नहीं लगते।

‘’महाराज अथवा – जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राहाण इस प्रकार की

1.उस समय के खेल।

2.उस समय के जुए।

लडाई-झगडों की बातों में लगे रहते हैं, जैसे-तुम इस मत (=धर्म विनय) को नही जानते, में जानता हूं तुम क्यान जानोंगे?तमने इस ठीक नहीं समझा है, में इसे ठीक-ठाक समझता हू में

धर्मानुकूल कहता हूं तम धर्म-विरूद्ध कहते हो जो पहले कहना चाहिए था, उसे तुमने पीछे कह दिया, जो और जो पीछे कहना चाहिए था उसे पहले कह दिया, बात कट गई तुम पर दोषारोपण हो गया,तुम पकड लिए गए, इस आपत्ति से छूटने की कोशिश करो, यदि (कर) सकों, तो उत्तिर दो इत्यादी, उस प्रकार श्रमण गौतम लड़ाई-झगडों की बात में नही रहते।

‘महाराज अथवा – जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राहाण राजा का महामंत्री का, क्षत्रिय का, ब्राहामणों का, गृहस्थों का, कुमारों का (इधर-उधर) दूत का काम-वहां जाओं, यहां आओ, यह लाओ, यह वहां ले जे जाओ इत्या दि, करते फिरते हैं, उस प्रकार श्रमण गोतम दूत का काम नही करता। महाराज अथवा – जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राहाण पाखंडी और वंचक, बातूनी ज्योयपिषि के पेशेवाले,जादू-मन्त र दिखाने वाले ओर लाभ से लाभ की खोज करते है, वैसे क्षमण गोतम नहीं है।

3 महाशील :-

जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राहाण श्रद्धापर्वक दिये गए भोजन को खाकर इस प्रकार की हीन (=नीच) विद्या से जीवन बिताते हैं जैसे-अंगविद्दा, उत्पा द स्वधप्नव, लक्षण भूषिक-विष-विद्दा, अग्निहवन, दर्वी-होम, कण-होम, तण्डुाल होम, धृत होम,तेल होम, मुख से घी लेकर कुल्लेस से होम, रूधिर होम, वास्तुलविद्या, क्षेत्रविद्दा, शिव भूत,भूरि सर्प विष बिच्छू के झाड़-फूंक की विद्या, पक्षी शरपरित्राण(=मंत्र जाप, जिससे लड़ाई मे बाण शरीर पर नगिरे), ओर मृगचक्र, उस प्रकार श्रमण गौतम इस प्रकार की हीन विद्दा से निन्दित जीवन नहीं बिताते।

महाराज अथवा – जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राहाण इस प्रकारकी हीन विद्या से निन्दित जीवन बिताते हैं, जैसे-मणि-लक्षण, वस्त्रक दण्डस असि, बाण, धनुष, आयु, स्त्रीस, पुरूष, कुमार कुमारी दास, हस्ति अश्वी, वृषभ, गाय, अज, मेष, मुर्गा, बत्तवख, गोह, कर्णिका, कच्छकप और मृग-लक्षण उस प्रकार श्रमण गोतम इस प्रकारकी हीन विद्या से निन्दित जीवन नही बिताता।

‘महाराज अथवा- इस प्रकार निन्दित जीवन बिताते हैं, जैसे-राजाबाहर निकल जाएगा, नहीं निकली जाएगा, चहां का राजा बाहर जाएगा, बाहर का राजा यहां आएगा, यहां के राजा की जीत होगी और बाहरके राजा की हार, यहां के राजा की हार होगी और बाहर से राजाकी जीत, इसकी जीत होगी और उसकी हार उस प्रकारश्रमण गौतम इस प्रकार की हीन विद्या से निन्दितजीवन नहीं बिताता।

‘महाराज अथवा-निन्दित जीवन बिताते हैं, जैसे-चंद्र ग्रहण होगा, सूर्य-ग्रहण, नक्षत्र-ग्रहण, चंद्रमा और सूर्च अपने-अपने मार्ग ही पर रहेंगे, चन्द्रलमा और सूर्य अपने मार्ग से दूसरे मार्ग पर चले जाएंगे, नक्षत्र अपने मार्ग से हट जाएगा, उल्कापात होगा, भूकम्प् आएगा, सूखा बादल गरजेगा, चंद्रमा, सूर्य और नक्षत्रों का उदय, अस्त , सदोष होगा, चंद्र-ग्रहण का यह फल होगा, चंद्रमा, सूर्य और नक्षत्र क उदय, अस्त सदोष या निर्दोष होने से यह फल होगा उस प्रकार क्षमण गोतम इस प्रकारकी हीन विद्दा से निन्दित जीवन नहीं बिताते।

‘महाराज ! अथवा निन्दित जीवन बिताते हैं, जैसे-अच्छी वृष्टि होगी, बुरी वृष्टि होगी सस्ती-होगी, महंगी पडेगी कुशल होगा भय होगा रोग होगा आरोग्य होगा हस्त्रेखा-विद्दा गणना कविता-पाठ इतयादि उस प्रकार क्षमण गोतम नही महाराज! अथवा निन्दित जीवन बिताते हैं जैसे-सगाई विवाह के लिए उचित नक्षत्र बताना उधार या रूण मे दिये गए रूपयों के वसूल करने के लिए उचित नक्षत्र बताना सजना-धजना नष्टक करना गभपुष्टि करनाय मंत्रबल से जीभ को बांध देना ठुड्ड को बंध दना दूसरे के हाथ को उलट देना दूसरे के हाथ को उलट देना दूसरे के कान को बहरा कर देना दर्पण पर देवता बुलाकर प्रश्ने पूछना कुमारी क शरीरपर और देववहिंनी के शरीर पर और देववहिनी क शरीर पर देवता बुलाकर प्रश्नं पूछना कुमारी के शरीर पर और देववहिनी के शरीर पर देवता बुलाकर प्रश्न पूछना सूर्य पूजा, महाब्रहा-पूजा, मंत्र के बल मुंह से अग्नि निकालना, उस प्रकार श्रमणगोतम नहीं।

महाराज! अथवा निन्दित जीवन बिताते हैं जैसे- जैसे-मत्रता मानना, मत्रत पूरी करना, मंत्र का अभ्याहस करना, मंत्र बल से पुरूष को नपुंसक और नपुंसक को पुरूष बनाना इन्द्रीजाल बलिकर्म आचमन स्नाकन कार्य अग्नि-होम दवा देकर वमन विरेचन ऊर्ध्व विरेचन, सिरोविरेचन कराना, कान मे डालने के लिए तेल तैयार कराना अखि के लिए नाम में तेल देकर छिंकवाना अंजन तैयार करना, छुरी-कांटे की चिकित्सास करना, वैद्दाकर्म उस प्रकार क्षमण गोतम नही। ’महाराज! यह शील तो बहुत छोटे और गौण हैं, जिसके कारण अनाड़ी मेरी प्रशंसा करते हैं।

महाराज! वह भिक्खु इस प्रकार शीलसम्प,त्र हो इस शील-संवर के कारण कही से भय नहीं देखता हैं। जैसे ’महाराज! कोई मूर्धाभिषिक्तल (=Sovereogn) क्षत्रिय राजा, सभी शत्रुओं को जीतकर कही से किसी शत्रु से भय नही खाता, उसी तरह ’महाराज! भिक्खुह इस प्रकार शीलसम्पेत्र ही कही से। वह इस शल के पालन करने से अपने भीतर निदोष सुख को अनुभव करता है। ’महाराज! भिक्खुभ इर तरह शीलसम्प त्र होता है।

5 समाधि यज्ञ :-

प्रथम ध्यान में वितर्क विचार दुसरे ध्या।न मे वितर्क विचार से मुक्ती तितितरे ध्यान में प्रीती का चतुर्थ ध्यावन में उस विचार के चिता से बाहर निकालना है आरे पंचम ध्यापन मे वह एकाग्रता से समाधीस्थर होना है। इसीलिए समाधी यज्ञ कल्यारकारी व महाफलदायी होना है।

1. प्रथम ध्यान

इन नीवारणों को अपने में नष्टय देख, प्रमोद (आनन्दड) उत्पैत्र होता है। प्रमुदित होने से प्रति उत्पमत्र होने से शरीर शान्तक होता है। शरीर के शान्त् रहने से उसे सुख होता है सुख के उत्प त्र होने से वित्तह समाहित (=एकाग्र) होता है। वह कामों (= सांसारिक भोगो की इच्छातइच्छास) को छोड, पापों को छोडा स-वितर्क स-विचार और विवेक से उत्पइत्र प्रीति सुखवाले प्रथम

ध्यापन को प्राप्तह करकें विहार करता है। वह इस शरीर को विवेक से उत्प त्र प्रति-सुख से सोंचता है, भिगोता है, पूर्ण करता हैं ओर चारों ओर व्या प्तप करता है।

उत्पंत्र प्रीति सुखवाले प्रथम ध्याखन को प्राप्त। करके विहार करता है। वह इस शरीर को विक्की से उत्पधत्र प्रीति सुख से सींचता है, भिगोता है पूर्ण करता है ओर चारोंओर व्याप्ता करता है। उसके शरीर का काई भी भाग विक्के से उत्प्त्र उस प्रीति-सुख से अव्याभप्ता नहीं रहता।

'जैसे महाराज भाई या नाई का शागिर्द (=अन्तुेवासी, लडका) कांसे से थाल में स्नान-चूर्ण को डाल पानी से थोडा़-थोड़ा सींचे। वह स्नानचूर्ण की पिण्डी तेल से अनुगत,बाहर-भीतर तेल से व्या प्तर हो (किन्तु तेल) ने चुवे।इसी तरह महाराज! इस शरीरको विवेक से उत्पात्र प्रीतिसुख से उसके शरीर को कोई भाग नही रहता है।

'महाराज ! जो भिक्खु भोगों छोड़ सवितर्क, सुविचार, और विवेक से उत्पुत्र प्रीतिसुख वाले प्रथम ध्या न को प्राप्तर हो विहार करता है। वह इसी शरीर को विवेक से उत्पतत्र प्रीतिसुख से उसके शरीर का कोई भाग नही रहता है महाराज यह भी प्रत्यवक्ष श्रामण्य-फल (=श्रमण भाव का-फल) है, पहले जो प्रत्य्क्ष श्रामण्यई फल कहे गए हैं, उनसे भी बढकर =प्रशस्त तर है।

2 द्वितीय ध्यान

और फिर महाराज भिक्खु वितर्क और विचार के शान्त् हो जाने से भीतरी प्रसाद, चिन की एकाग्रतासे युक्तच किन्तु वितर्क और विचार से रहित समधि से उत्पात्र प्रीतिसुख वाले दूसरे ध्या न को प्राप्तह होकर विहार करता है। वह इसी शरीर को समाधि से उत्पखत्र प्रीतिसुख से उसके शरीर का कोई भाग।

''जैसे महाराज! को जलाशय गम्भीर्र और भीतर में पानी के सोतेवाला हो। न उसके पूर्व दिशा मे जल के आनें को कोई रास्ता हो, दक्षिण न परिचम ने उत्तरर समय-समय पर वर्षा की धारा भी उस (जलाशिय में) आकर न गिरे।और उस जलाशय (के भीतर से) शीतल जलधारा

फूटकर उस जलाशय की शीतल जल से भरे और उस जलाशय का कोई भी भाग शीतल जलधारा से रहित न हो। इसी तरह से महाराज! इसी शरीर को समाधि से उत्पन्न उसकेशरीर को कोई भाग। यह भी महाराज प्रत्यजक्ष श्रामण्यउफल पहले कहे गए से भी बढ़कर है।

3.तृतीय ध्यान

और फिर महाराज! भिक्खुण प्रीति और विराग से भी उपेक्षायुक्त (=अन्यि–मनस्कि) हो समृति और संप्रजन्य से युक्तभ हो विहार करता है। और शरीर से आर्यो (=पण्डितों के कहे हुए सभी सुखों का अनुभव करता है और उपेक्षा के साथ, स्मृ तिमान और और सुखविहार वाले तीसरे ध्या न को प्राप्तस होकर विहार करता है। वह इसी शरीर को प्रीतिराहित सुखसे सींचता इसके शरीर का कोई भी भाग प्रीतिरहित सुख से अव्यासप्तइ नहीं होता।

जैसे महारा उत्पपलसमुदाय पद्मसमुदाय या पुण्डररीक समुदाय में कोई-कोई नील कमल (=उत्पपल) रक्तरकमल या श्वेतकमल जल में उत्पित्र हुए जल ही मे बढे जल ही में रहने वाले, और जल ही के गौतर पुष्टल होने वाले जल से व्यालप्त उनका कोई भी भाग शीत जल से अव्यालप्ते नहीं रहता। इसी तरह महाराज। भक्खु इस शरीर को प्रीतिरहित सुख से उसके शरीर का कोई भी भाग महाराज यह भी प्रत्यरक्ष श्रामण्यी फल।

4.चतुर्थ ध्यान

और महाराज भिक्खुय सुख को छोड दुख को छोड पहले ही सौमनस्यह और दीर्मनस्य के अस्त हो जाने से न-दुख और न-सुखवाले तथा स्मृऔति और उपेक्षा से शुद्ध चौथे ध्याकन को प्राप्त कर विहार करता है। सौ इसी शरीर की अपने शुद्ध चिष्त्चौथ से निर्मल बनाकर बैठता है। उसके शरीर का कोई भाग शुद्ध और निर्मल चितत् से अव्या प्ती नहीं होता जैसे महाराज कोई भाग उस उजले कपडे से बे-ढंका न हो। इसी तरह महाराज भिक्खुर इसी शरी को अव्याप्ता नहीं होता। यह भी महाराज प्रत्य क्ष श्रामण्योफल।

6 प्रज्ञा यज्ञ :-

1. पलनरसये1. ज्ञान दर्शन :-

‘’वह इस प्रकार एकाग्र शुद्ध, निर्मल, निष्पाप, क्लेशों से रहित, मृदु. मनोरम, और निश्चगय वित्त पाने के बाद सच्चे् ज्ञान को प्रत्य क्ष करने के लिए अपने चित्तप को नवाता है। वह इस प्रकार जानता है-‘यह मेरा शरीर, भौतिक (=रूपी चार महाभूतो (=पृथ्वी,जल, तेज और वायु से बना, माता और पिता के संयोग से उत्पमत्र, भात-दाल से बध्र्दित, अनित्यन, छेदन भंदन, मर्दन, और नाशन योग्यी (है)। यह मेरा विज्ञान (=मन) इसमें लग जाता है और वंध जाता है। जैसे महाराज श्वीेत अच्छी् जातिवाला, अठपहलू, अच्छां काम किया हुआ, स्व च्छछ, प्रस्त्र , और सभी गुणों से युक्तप हीरा (हो), और उसमे नीला, पीला, पीला,लाल, उजला, या पाडु रेग का धागा पिरोया हो। उसे आंख वाला (कोई) पुरूष हाथ में लेकर देख-यह श्वे त हीरा पांडुरंग का धागा पिरोया हो। उसे आंख वाला (कोई) पुरूष हाथ में लेकर देखे-‘यह श्वे।त हीरा पांडु रंग का धागा पिरोया है। इसी तरह महाराज भिक्खु एकाग्र शुद्ध चित्त को लगाता है। वह ऐसा जानता है,- यह मेरा शरीर भौतिक नाश योग्यच है। और मेरा यह विज्ञान यहां लग गया है, फंस गधा है। यह भी महाराज प्रत्यैक्ष श्रामण्यय-फल बढ़कर है।

2 मनोमय शरीर का निर्माण

‘’वह इस प्रकार क एकाग्र, शुद्ध चित्तज, पाने क बाद मनोमय शरीर क निर्माण करने के लिए अपने चित्त। को लगाता है। वह इस शरीरसे अलग एक दूसरे भौतिक, मनोमय, सभी अंगप्रत्यंइगों से युक्त, अच्छीह पुष्टक इन्द्रियों वाले शरीर का निर्माण करता है। जैसे महाराज कोई पुरूष मूंज से सरकंडे का निकालले। उसके मन में ऐसा हो, ‘यह मूंज है (और) यह सरकंडा। मूंज दूसरी है ओर सरकंडा दूसरा है। मूंत ही से से निकाली गयी है। या, जैसे महाराज कोई (संपेरा) अपने पिटारे से सांप की निकाले। उसक मन मे ऐसा हो- यह पिटारा। इसी तरह से महाराज भिक्खुं

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध चित्तर पाकर मनोमय शरीर क निर्माणके लिए अपने चित्ता को लगाता है। सो इस शरीर से दूसरा यह भी महाराज प्रत्यंनक्ष श्रामण्य् –फल।

3 दिव्यत क्षोत्र :-

वह इस प्रकार एकाग्र शुद्ध चित्त् को पाकर दिव्यण क्षोत्र धातु के पाने के लिए अपने चित्तक को लगाता है और वह अपने अलैकिक शुद्ध दिव्यक, क्षोत्र (=कान) से दोनों(प्रकार के) शुब्दु सुनता है, देवताओं के भी और मनुष्यों के भी, दूर के भी और निकट के भी। जैसे महाराज कोई पुरूष रास्ते मे जा रहा हो, वह सुने भेरी क शब्दह, मृदंग क शबद, शंख और प्रणव के शब्द। उसकेमन मे ऐसा हो, (यह) मेरी का शब्दम है, शंख और प्रणव का शब्द है। इसी तरह से महाराज भिक्खु इस प्रकार एकाग्र शुद्ध चित्त को पा दिव्य क्षोत्र धातु क लिए अपने चित्त् को लगाता है। वह, शुद्ध दिव्य दूर क भी ओर निकट के भी। भी।महाराज यह भी प्रत्यचक्ष श्रामण्य्-फल।

4.परचित ज्ञान

वह इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध चित्तक चित्त को पाकर दूसरे क चित्तय की बातों को जानने के लिए अपना चित्त लगता है। वह दूसरे सतवों के, दूसरे लोगो क चित्त को अपने चित्तग से जान लेता है- वैराग्येसहित चित्तो व्दोषसहित चित्ता, व्दे ष से रहित चित्त मोहसहित चित्त् मोह से रहित संकीर्ण चित्त् विक्षिप्त् चित्तन उदार चित्त,अनुदार चित्त्, सांसारिक (=साधरण) चित्त। अलैकिक (=असाधारण) चित्तर, एकाग्र चित्त् ने-एकाग्र, विमुक्ति चित्तव, अं-मुक्ति (=बद्ध) चित्त् (को वेसा ही जाने लेता है):

जैसे महाराज स्त्री या पुरूष, या लडका, या जवान, अपने को सजा धजाकर दर्पण या शुद्ध निर्मल स्वकच्छष जल के पात्रमे अपने मुख को देखते हुए अपने समुख के मेजेपनया स्वीच्छता की ज्यों का त्यों जान ले, उसी तरह महाराज भिक्खु इस चित्त को पाकर दूसरे के चित्तय वह दूसरे सत्वोंह और दूसरे लोगों के चित्त । वी भी महाराज प्रत्य्क्ष श्रामण्ये-फल।

5.पूर्वजन्मों का स्मरण :-

वह इस प्रकार एकाग्र चित्ता को पाकर पूर्व जन्मोंज की बातों को स्मवरण करने क लिए अपने चित्तम को लगाता है। सौ नाना पूर्व जन्मों की बातों को स्म रण करता है जैसे, एक जाति दो तीन चार पांच दस वीस जीस चालीस पचास सौ हजार लाख अनेक संवर्त 9=

***

तृतीय-अध्याय

तृतीय अध्याय

कुटदन्त सुत्त और किसानों का जीवन

बुद्धकाल में भारतीय जनता का आर्थिक जीवन सुखी और समृद्ध था। अनेक बुद्ध कोलीन लोगों के संपत्ति का वर्णन मिलता है। जहाँ तक कृषकों की अवस्थाक का सम्बगध है, खेतों और वहाँ के सम्पृन्नक, अंकंटक, अपीडित, क्षेमयुक्तक और धन धान्य पूर्ण, समृद्ध जीवन था। देश में स्वकर्ण-रजन, धन-धान्यर और पशु-धन की कमी नहीं थी। वैसे ही सुत्तनिपात में धनीयसुत्त, कसिभारद्वाज सुत्त तथा दीघनिकाय के सिगालोवाद सुत्तत में किसानों का जीवन वर्णन किया गया है तथा उनके आचरण का भी वर्णन किया गया है।

1. धनिय सुत्त -

इस सुत्त में धनिय नामक खाले का सुखी जीवन का महत्वव वर्णन किया गया है। धनिय नामक ग्वानला अपने परिजनों के साथ मही नदी के किनारे निवास करना है। ''उसकी कुटी अच्छीस तरह छायी हुई है। आग भी जल रही है। हे बादलो यदि तुम चाहो तो बरसो'' इससे यह पता चलता है कि धनिय गोप की सुखी जीवन का महतव स्प ष्टी होता है। उसकी खेती में धान की फसल होती है, और गांवे भी दुध देती है। इसलिए धनिय गोप आरवस्त्रक होकर सुखी जीवन जी रहा है।

उसी मही नदी के किनारे भगवान एक रात के लिए रूके हुये थे। धनिय गोप की बाते सुनकर भगवान कहते है,

अक्को-धनो विगताखिलो हमस्मि

अनुतीरे महिये करत्ति वासो।''2

विवटा कुटी निब्बुतो गिनि, अथ चे पत्थायसि पवस्सत देव।।

भगवान धनियगोप को कहते है कि मैं क्रोधाहित हूँ, मेरे चित्त के कील निकल गये हे, मही नदी के किनारे एक रात के लिए निवास कर रहा हूँ, मेरी कुटी खुली हुई है, आग शान्ति हो गई है, मुझे अभी इन बातों की चीजों की आवश्यखकता नहीं है, देव अगर तुम चाहते हो तो खुप बरसों क्योंकि इससे कोई फर्क पडनेवाला नही है।

फिर धिनयगोप कहता है कि,

''अंधकमसा न विज्जशरे

कच्छे रूल्ह तिणे चरान्ति गावो।''3

वृट्ठि पि सहेय्युं आगतं, अथ चे पत्थहयसि पवस्सक देव।।

अर्थात् यहाँ डास नहीं है, मच्छ र अंधक मक्खिया है। दलदल (कछार)में उगी हुई घास को गाये चरती है, वे आई वर्षो को भी सहन कर लेती है इसलिए हे देव यदि तुम चाहते हो तो खुप बरसों। क्यों कि मैंने बारिश के पहले ही तैयारी करके रखी है। इस पर भगवान धनिय गोप को कहते है कि,

''बद्धा हि भिसी सुसंखत।
तिण्णो। पारगतो विनेय्य ओघं।
अत्थो भिसिया न विज्ज ति, अत्थह चे पत्थ यसि पवस्सि देव।।4

भगवान कहते है मैंने एक अच्छा बेडा बना लिया है। मैंने सांसरिक बाढ को तैरकर पार कर लिया है अब मुझे बेडे की आवश्यडकता नहीं है हे देव अगर तुम चाहते हो तो बरसो। अब इन सारी बातों का मुझ पर असर नहीं हो सकता है। धनियगोप अपने पत्नीअ के बारे में कहता है कि,

'गोपी मम अस्सकवा अलोला
दीघरतं संवासिया मनापा।''
तस्सां न सुणामि किंपि पापं, अथ चे पत्थंयस्सि पवस्से देव।।5

अर्थात धनियगोप कहता है कि मेरी गवालिन (पत्नी) आज्ञाकारिणी है, चंचलता रहित हे, वह उसके साथ दीर्घकाल से प्याअर से मिल जुलकर रहती है, मैं उसके किसी भी प्रकार के पाप को नहीं सुनता हूँ। ऐसी जीवन संगिनी के साथ में रहता हूँ। मेरी पत्नी सदाचारी है1 मुझे किसी भी बात का भय नहीं अगर हे देव तुम चाहते हो तो बरसो। ऐसे सदाचार का आचरण करनेवाले ग्वाला व गवालिन को आगे तथागत भगवान कहते है कि,

''चित्तं मम अस्व् आचवं विमुत्त, दीघरतं परिभावतं सुदन्तं।

पापं पन में न विज्जकति अथ चे पत्थआयसि पवस्सझ देव।।''6

अर्थात मेरा चित्त संयत और विमुक्तआ है। एक दीर्घकाल से वह सुशिक्षित और सुसंयत है, (दमन-कृत) मेरे भीतर पाप नहीं है, मैने अपने चित्त पर काबू पा लिया है अब वह इधर उधर नहीं भटकता है, मेरा चित्त आसविनयों से विमुक्तप हो गया है। इसीलिए है देव तुम चाहते हो तो खुप बरसो। फिर धनियगोप अपने स्वगयं के बारे में कहता है कि,

''अत्त वेतनभत्तो' हमीस्म, पुत्ता चमें समानिया अरोगा।

तेसं न सुणामि किंची पापं अथ चे पत्थीयसि पवस्सप देव।।''7

मैं स्वुयं कमाकर खाता हुँ। मुझे एक पुत्र भी है वह अनुकूल और निरोगी है। मेरा पुत्र कोई अकुशल कर्म नहीं करता है, मैं उनके अकुशल आचरण को नहीं सुनता हुँ क्योंअकि वह सदाचार का पालन करता है इसीलिए है देव तुम चाहते हो तो खुप बरसो। तब भगवान सांसरिक संसर से मुक्ता होकर विहार करने के बारे में कहते है कि,

''ना' हं भतके' कस्सोचि, निब्बिट्ठेनं चरामि सब्बकलोके।

अत्थोह भतिया न विज्ज ति, अथ चे पत्थायसि पवस्सम देव।।''8

मै किसी का नौकर नहीं हुँ। मैं सारे संसार से मुक्तप होकर विहार करता हुँ। मुझे नौकरी करने की आवश्य कता नहीं है। संसार के आसक्तियों से मुक्तक हो गया हुँ। इसलिए हे देव तुम

चाहते हो तो खुप बरसो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंसकि सभी प्रकार के आसक्ति से मुक्तख हो गया हुँ। फिर धनियागोप अपने गायों के बारे में कहता है,

''अत्थि वसा अत्थि धेनुपा, गोधरणियों पवोणियों पि अत्थि।

उसभो 'पि गवम्पवती' ध अत्थि अत्यं चे पत्थोयसि पवस्सय देव।।''9

अर्थात मेरे पास बछडे है, दुधारू गाये है, गाभिण गाये है और तरूण गाये भी है। यहाँ गायों का पति सांड भी है। इन सभी जानवरों को भी वर्षा से कोई परेशानी नहीं है क्यों कि मैंने उनके लिए भी रहने का अच्छास प्रबंन्ध किया हुआ है। इसलिए हे देव तुम चाहते हो तो खुप बरसो। बाद में इसी पर भगवान बुद्ध ने धनियगोप को कहा कि,

'नत्थि वसा नत्थि, धेनुपा, गोधरणियों पवेणियों, पि नत्थि।

उसभो ' पि गवम्पनती' ध नत्थि, अथ चे पत्थययसि पवस्स देव।।''10

मेरे पास न बछडे है, न दूध देनेवाली दुधारू गाये है, गाभिन और तरूण गायें भी नहीं है, यहाँ गायों का पति सांड भी नहीं है। क्यों कि तथागत बुद्ध को इन सभी चीजों की आवश्यसकता नहीं है। सांसरिक जीवन त्यादग दिया है, सांसरिक वस्तुओं की आसक्ति से विमूक्तय हो गया हुँ। इसलिए हे देव तुम चाहते हो तो खुप बरसो। फिर धनियगोप भगवान से कहता है कि,

'खीला निखाता असंपवेधी, दामा मुंजमया नवा सुसंठाना।

नहि सक्खिन्ति धेनुपा पि छेत्तुं अथ चे पत्थइयसि पवस्सय देव।।''11

मैंने गाये, सांड, तथा बछडों के लिए मजबूत खुंटे गडे है। घांस की नई बनाई रस्सियां है, उसे युवा बछडे भी नहीं तोड सकते है। इतनी अच्छीं तरह से मैंने इन पशुओं के लिए व्यावस्थाछ की है जो कि जितनी वर्षा बरसती है देव तो तुम खुप बरसो। वर्षा बरसने से मेरे जानवरों (पशुओ) को दिक्क त नहीं होगी इसलिए हे दवे तुम चाहते हो तो खुप बरसो। फिर भगवान धनिय-गोप को अपने जीवन के बारे में बताते है,

''उसभोरिव छेत्वा बन्धधनानि, नागो पुतिलतं' व दालयित्वाह।

नाहं पुन उपेस्सं गब्भासेय्यं, अथ चे पत्थगयसि पवस्सं देव।।''12

सांड के समान बन्धसनों को तोडकर हाथी के समान दुर्गन्धत युक्तस लता को नष्ट' कर, मैं फिर जन्म ग्रहण नहीं करूंगा। क्योंकि सांड किसी बन्धनों से नहीं बंधता है वैसे ही मैंने सांसरिक बन्ध्नों को तोड दिया है। हाथी जैसा दुर्गन्धा युक्ती लता को नष्ट करता है वैसे मैं भी सांसरिक जीवन की दुर्गन्धज युक्ता लता मैंने नष्टत किया है। फूिर से सांसरिक जीवन की आसक्ति से मुक्त होकर मै फिर जन्मम ग्रहण नहीं करूंगा यही तथागत बुद्ध का नियम है। इसलिए हे देव (वर्षा) तुम चाहते हो तो खुप बरसो। मुझे वर्षा होने से कोई आपत्ती नहीं है। मैं मुक्तो होकर विहार करता हूँ। इसलिए हे वर्षा खुप बरसो। उसी क्षण उँची नीची भुमि को भरती हुई जोरों की वर्षा हुई, मेघ बरसने लगे, बरसते हुए वर्षा (मेघ) को धनियगोप सुनता है और सुनकर यह बात कहता है कि,

''दिन्न चथलं च पुरयन्तो, महामेघो पावस्सि ताव देव।

सुत्वाप देवस्सच बस्सतती, इमनत्थंम धनियो अभासथ।''13

''लाभा पत नो अनपका, ये भयं भगवन्तं अद्दसाम।

सरणं तमुपेम चक्खुवय, सत्या नो होहि तुवं महामुनि।।''14

अहो। हमें बहुत ही लाभ हुआ है, हम भगवान के दर्शन पा रहे है। हम चसुमान की शरण जाते है। हे महामुनी। आप हमारे मार्गदर्शक हो। धनियगोप और तथागत बुद्ध का मही नदी के किनारे उपर्युक्तव वार्तालाप होता है जब भगवान धनियगोप सांसरिक जीवन से मुक्ता होने की बात कहते और भी बाते कहते है। भगवान बुद्ध की उन बातों से (उपदेशो) धनियगोप के मन पर असर होता है उन्हेंब यह पता चलताहै कि भगवान चक्खूीमान है, उनकी शरण में जाना चाहिए इसलिए धनियगोप तथागत बुद्ध की अपना (शास्ताक-गुरू) मार्गदर्शक मानता है। बाद में वह यह कहता है कि,

''गोपी च अहं च अस्स वा, ब्रह्मचरियं सुगते चरामसे।

जातिमरणस्सप पारगा, दुक्ख्स्स,न्त्करा भवामसे।।''15

मैं और मेरी आज्ञाकारिणी गावालिन बुद्ध-धर्म का पालन करेंगे सुगत के विहार में उत्तम जीवन का पालन करेंगे। जन्मस तथा मरण को पार कर दुख का अंत करनेवाले हो जायेंगे। क्यों कि चक्खूथमान का बुद्ध-धर्म जन्मि-मरण को पार करनेवाला है। ऐसे बुद्ध, धर्म, संघ के शरण जाकर उत्तम जीवन का पालन करेंगे। उसी समय मार (शंका, संशय) उत्पीन्नम होती है और कहती है,

''नन्दसति पुत्तेहि पुत्तिमा, गोभिको गोहि तथेव नन्द ति।

उपधीहि नरस्सस नन्द ना, नहि सो नन्दशति यो निरूपधि।।''16

जैसे पुत्रोवाला पुत्रों से आनन्दित होता है वैसे ही गौवो वाला गौवों से आनोन्दित होता है। विषय-भोग ही मनुष्यन के आनन्दे के कारण है,जो विषय भोग से रहित है, वह कभी आनन्दित नहीं होता। यहाँ मार सांसरिक जीवन की आसक्ति से मुक्तह न होने की बात कही है जो विषय भोग को ज्यादा महत्व देता है। इससे केवल मनुष्यन के जीवन में विषय भोग तथा आसक्ति इन बातों से ही मनुष्यआ आनवन्दित रह सकता है ऐसा मार (शंका) कहता है। परन्तुग तथागत बुद्ध उपदेश देते है कि,

''सोचति पुत्तेहि पुत्तिमा गोमिको गोहि तथेव सोचति।

उपधीहि नरस्सर सोचना, नहि सो सोचति यो निरूपधि' ति।।''17

जब पुत्रोंवाला पुत्रों से शोक करता है, वैसे ही गायेवाला गाये से शोक करता है। आसक्ति ही शोक के कारण है जो आसक्ति से मुक्तत है, वह कभी शोक नहीं करता। विषय भोगों से रहित आस्त्र वों से रहित है वह शोक रहित होता है तथा इन सभी चीजों पर विजय प्राप्‍ करता है वही अर्हत पद को प्राप्त करता है।

धनियगोप और तथागत बुद्ध का वार्ता क्रम है। इस सुत्त में धनियगोप का मानवी सुखी जीवन का वर्णन किया गया है। उनकी पत्नी और पुत्र के साथ बडी खुशहाल जिदंगी मीलि है।जब धनियगोप एक किसान (कृषक) है। साथ में गाये भी है इसका मतलब दुग्धी के लिए गाये भी पालता है। एक प्रकार का जोड-धंदा (व्यसवसाय) दिखाई देता है। जब वह भगवान का उपदेश सुनता है तो धनियगोप और उसकी पत्नील गवालिन उनकी शरण में जाते है और भगवान बुद्ध को अपना गुरू मानते है। उन्होंने विषय भोग तथा आसक्ति पर विजय प्राप्तक कर लिया था और वह अर्हत्व। को प्राप्ते हुये है1 इस सुत्त में किसानों के सुखी जीवन का वर्णन है। इसलिए यह सुत्त कृषि की महत्तास सिद्ध करती है और सदाचार से रहते है। इसलिए सुत्तोनिपात नामक ग्रंथ में धनिय सुत्त में मानवी सुखी जीवन के साथ भगवान आस्त्रों वों से सैहित आचरण के साथ मेल बैढाते से हुए दिया गया है। जिसका मूल पाठ सुत्तनिपात नामक ग्रंथ के धनियसुत्त में वर्णित है। धनियगोप का और उनकी पत्नीन का आचरण सदाचार से प्रेरित था। इसलिए वह दोनों पति-पत्नी भगवान के बुद्ध, धम्मइ, संघ को शरण जाकर बाद में उन्होंने अर्हत्वत पद प्राप्तन करनेवालों में से हुये है। इस वार्ता क्रम में सिर्फ किसानों का ही सुखी जीवन वर्णित नहीं बल्कि भगवान बुद्ध के आसक्ति रहित, सदाचारी जीवन का भी वर्णन है। ''इस सुत्त में भगवाननेधर्म कौण्डिव्य नगर के श्रेष्ठी धनिय नाम गवाले को मही नदी के किनारे वर्षा काल में सांसरिक आसक्तियों के त्या ग का उपदेश दिया है, जिसे सुनकर सुनकर धनिय अपनी पत्नीष के साथ भिक्षू हो गया और अर्हत्वह का साक्षात्कार कर लिया।''

कसिभारद्वाज सुत्त

बुद्धकाव्यज में ब्राह्मण खेती करते ये इसका वर्णन सुत्तनियात नामक ग्रंथ के कसिभारद्वाज सुत्त में हैं। जैसे अन्यत लोग खेती करते थे वैसे ही ब्राह्मण भी खेती करते थे। इसमें बतलाया गया

है कि जैसे ब्राह्मण खेती करता है वैसे भगवान भी कृषक है ब्राह्मण कि किसानी क्या है और भगवान कि किसानी क्या है? इसका वर्णन इस सुत्त में है।

एक समय तथागत मगध के दक्षिणागिरी में एकनाला नानक ब्राह्मणों के गाँव में विहारकर रहे थे। इस समय कृषिभारद्वाज ब्राह्मण के पाँच सौ हाल बोने के समय जोताई के कार्य में लगे हुए थे। तब भगवान बुद्ध पुर्वाक्ष समय में पहन, पात्र और चीवर से जहाँ कृषि भारद्वाज ब्राह्मण का कार्यस्थान था, वहाँ गए, उस समय कृषि भारद्वाज ब्राह्मण के यहाँ भोजन परसा जा रहा था। तब भगवान वहाँ गए। भगवान भोजन के लिए खडे थे यह कृषिभारद्वाज ब्राह्मण ने देखा और देखकर भगवान से यह कहा-

''अह, खो समण! कसामि च वपामि च, कसित्वाब च

पपित्वा च भुञ्जामि; त्वं! पि समण! कसस्सुक च वपुस्सा च,

कसित्वा च वपित्वाख च भुञ्जस्सु' ति''

अर्थात ''हे श्रमण ! में जोतता और बोता हुँ, जोत और बोकर खाता हुँ। हे श्रमण! तुम भी जोतो और बोओ, जोत और बोकर खाओ'' ऐसा कृषिभारद्वाज ब्राह्मण ने भगवान को कहा तब भगवान बुद्ध ने कृषिभारद्वाज से कहा ''ब्राह्मण। मैं भी जोतता हुँ ओर बोता हुँ। जोत और बोकर खाता हुँ''ऐसा सुनकर कृषि भारद्वाज ब्राह्मण को लगा कि हमलोग गौतम के जुआठ, हाल, फाल, छेकुनी अथवाबैलोको नहीं देखते है फिर भी गौतम ऐसा कह रहे है ' 'हे ब्राह्मण! मैं भी जोतता और जोता हुँ। जोत और बोकर खाता हुँ''तब कसिभारद्वाज ब्राह्मण ने भगवान बुद्ध से गाथा में कहा है कि,

''कस्कोसिभ पटिजानसि, न च पस्साम ते कसि।

कसिं नो पुच्छितो ब्रूहि, यथा जानेमु ते कसिं।।

अर्थात भगवान आप अपने को कृषक समझते हो, बतलाते हो तो हम आपकी कृषि को नहीं देख रहे है। हम पुछने वालों को अपनी कृषि बतलाईये, जिससे कि हम सारे लोग ''आपकी कृषि को जाने, देख सके और कह सके कि यह भगवान की कृषि है। इसलिए भगवान आप अपनी कृषि हमें दिखलाइये, बतलाइये।''1 कसिभारद्वाज ब्राह्मण के इस कथन के उपरान्त भगवान ने अपने कृषि के बारे में पालि में गाथा के रूप में यह कहा है कि,

'सद्धा बीजं, तपो वुठ्ठि पञ्ञा में युगनङ्गलं।

हिरि ईसा मनो योत्तं सति में फाल पाचनं।।''

''श्रद्धा मेरा बीज है, तप दृष्टि हे, प्रजा मेरी जुआठ और हल है। लज्जाह हरीष (हल का दण्डा) है, मन मधना है, स्मृति मेरा फाल और छेकुनी है।'' इस प्रकार भगवान कसिभारद्वाज को अपने कृषि के बारे में कहा है। जिस प्रकार एक कृषक अपनी कृषि की मशागत करता है उसी प्रकार तथागत करता है। जिससे शरीर से संयत हुँ। वचन से भी संयत हुँ। भोजन और पेट के प्रति संयत हुँ। मैं सत्य की निराई निदान करता हुँ। विनम्रता मेराुगुण है। अर्हत्त्व की प्राप्ति ही मेरा फसल काटना है अर्थात मैं मुक्ति का मार्ग बतलाता हुँ, सिखाता हुँ। यही मेरी कृषि का कार्य है और ''वीर्य (शक्ति) मेरेबैल और निब्बायन की गाडी है, वह बिना रूके चलती है और वहाँ चली जा रही हे, जहाँ जाकर शोक (दु:ख) नहीं करना होता।''

इस प्रकार की गई खेती अमृत फालदायी होती है, इस प्रकार की गई खेती से मनुष्यृ सारे दु:खी से मुक्ता हो जाता है मनुष्यै के जीवन से दु:खो का नष्ट् (नाश) हो जाता है और दु:ख रहित, शोक रहित जीवन जीता है। जब तथागत के कृषि के बारे में सुनकर कसिभारद्वाज ब्राह्मण ने एक बहुत बडी काँसे के थाल में खीर परोस कर भगवान बुद्ध के ले गया और कहा- ''आप गौतम! खीर खाए आप किसान है, जो कि आप गौतम, अमरित फलदायी खेती करनें है'' परन्तुश कसिभारद्वाज ब्राह्मण तथागत बुद्ध धम्मोगपदेश करने से प्राप्तम भोजन को नहीं करते मेरे लिए यह

भोजन अभोज्य् है बुद्ध धम्मोपदेश से प्राप्त भोजन को त्या ग देते है। जो अच्छील तरह धम्म् को जानते है, नहीं परोसते। बुद्ध धम्मोपदेश के बाद भोजन नहीं करते यही विचार तथागत बुद्ध का है। इसीलिए जो ज्ञानी, महर्षि, क्षीणास्त्रयव और चंचलता रहित अन्नै और पेय सेवन करते है। पुण्यम का लाभ चाहने वालों के लिए यह उत्तम खेत होता है। जो खीर धम्मोपपदेश के बाद परोसी गयी वह अभोज्यल थी। उस खीर को तथागत ने हरी घासों रहित भूमि पर फेंकने या जीव रहित जल में डुबा देने को कहा था। क्योंतकि ''पेड पौधों में भी जीव होता है।'' जल में भी छोटे-छोटे सजीव प्राणी होते है हानी नहीं पहुँचनी चाहिए।'' तथागत ने पृथ्वी के सभी सजीवों की रक्षा करने की ओर इंगित किया गया है।

कसिभारद्वाज ने उस खीर को जीव-रहित जल में डुबा दिया। खीर जल में फेंकने पर चिटचिट करने लगी, ऊपर आप छोडने लगी। जैसे कि दिनभर का तपाया फाल जल में डालने चिटपिट करता, ऊपर आप छोडने लगता है ऐसे ही वह खीर जल में फेंकने पर पिटचिट करने लगी और ऊपर भाव छोडने लगी। तब कृषिभारद्वाज ब्राह्मण भगवान के पास जाकर भगवान के पैरों पर नतमस्तेक हो भगवान से कहा ''हे गौतम !आश्चपर्य है। जैसे कि उल्टेस हुए बर्तन को सीधा कर दे, ढँके हुए को उधाड दे, रास्तास भुले हुए को रास्ताक बतला दे अथवा अन्ध कार में तेल के प्रदीप को धारण करे जिससे की आँख वाले लोग को देख सके,ऐसे ही आप गौतम द्वारा अनेक प्रकार से धर्म प्रकाशित किया गया। मै गौतम की शरण जाता हुँ, धर्म और भिक्षु संघ की भी, मुझे आप गौतम के पास प्रव्रज्या मिले, उपसम्परदा मिले।''

इस प्रकार कृषिभारद्वाज ब्राह्मण ने भगवान के पास प्रव्रज्या पाई, उपसंपदा पाई। उपसंपन्नज होकर उन्होंकने जान लिया ''जन्म क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य पुर्ण कर लिया गया, करने योग्यल कर लिया गया, यहाँ कुछ करनेको शेष नहीं रहा।'' आयु भारद्वाज ने अर्हत्वि प्राप्तप कर लिया।

***

चतुर्थ-अध्याय

चतुर्थ अध्याय

आत्महत्या रोकने के उपाय

कृषक की आत्महत्या रोकने के लिए ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता है जिससे आत्महत्या रोकि जा सके। केंद्र सरकार के पास ऐसे ठोस कार्यक्रम होने चाहिए जो कृषि तथा कृषक के लिए लाभप्रद, हितकारी हो। इसी तरह राज्य सरकार के पास भी कार्यक्रम होने चाहिए जो कृषि और कृषक के लिए कल्यातणकारी हो कि कृषक आत्महत्या का शिकार न बन सके। उनका आर्थिक जीवन समृद्धीशाली बने। केंद्र और राज्य सरकार को ऐसे ढंग से उत्पासदन एवं धन का वितरण करना चाहिए कि सब कृषको को तदनुसार लाभ पहुँचे।

कृषी विषयक। कार्यक्रम को दुरदर्शन दिखाने चाहिए। अभ-अभी कृषि विषक कार्यक्रम दिखाना शुरू हुआ है। **T.V.** ऐसे प्रोग्राम जब आते है तो उसका समय और कृषक का समय में मेल नही बैठता। इसीलिए ऐसे प्रोग्राम कृष का समय के नुसार दिखने चाहिए। सरकार अगर संच मे आत्महत्या रोकना चाहती है तो उनके केल्याइण के लिए प्रोग्राम या सहायता निधी प्रदान करनी चाहिए जिससे कृषक का आर्थिक पक्ष सशक्तर हो सके। **T.V.** पर दिखाई जाने वाले कृषी विषय प्रोग्राम वह देख नही पाता। क्यों कि कृषक का समय और कार्यक्रमों का समय समान नही होता है भी उचित समय पर न होने के कारन वह यह कार्यक्रम नही देख पाता है। उस कार्यक्रम को रात के आठ या साडे आठ के देरम्यान दिखायेंगे तो वह सुकून से खाना खाते वक्तह वह प्रोग्राम देख सकता है।

कृषक की आत्महत्या रोकने के लिए मनुष्या जो समय अपनी जीविका कमाने में लगाता है वह कम होना चाहिए। काम के घण्टों में कमी केवल तभी सम्भमव हे,जब राज्ये अपने ऊपर कुछ सामाजिक एवं आर्धिक उत्तलर दायित्व ले। राज्य एक ऐसा आर्थिक ढाँचा स्थांपित करें जो

प्रत्येलक कृषक के लिए हितकारी हो।1 पहले से ही कृषक अपनी खेती को सबसे ज्याृदा समय देता है। इसी आशा मे कि फसल अच्छी फसल अच्छीृ हो वह फसल की अच्छे से मसागत करता है परंतु खेती वर्षा निर्भर होने के कारन अच्छील फसल होने की सम्भावना पुर्णतया वर्षो पर निर्भर होती है।

अर्थात राज्य सरकार या केन्द्र कृषक के लिए ऐसे नियम बनाने चाहिए जिससे कृषक को फायदा हो उसकी जीविका की समस्याओं का हल निकले। व्यकक्तिगत क्षत्र डॉ.अम्बेसडकर की दृष्टि में औद्योगीकरण नही कर सकता है और यदि इसके व्दाृरा औधौगीकरण सम्भव भी हुआ तो इसके वही विषमताएँ उत्पन्न हो जायेंगी है। जो युरोपिय देशों में पूजी पति वर्ग के कारण उत्पमन्नउ हुई है। कुछ अर्थशास्त्रियों का कहना है कि राज्यत में हस्तसक्षेप के बिना अर्थ-व्य वस्थार) ठीक-ठीक कार्य नही कर सकती है फान्से के सिसमण्डीअ **(Sismondi)** एवं कॉरनोट **(Cournot)** जर्मनी के हरमन **(Hermann)** एवं लिष्ट **(List)** इंगलंड के मिल **(Mill)** आदि विचारकों ने भी हस्त क्षेप को इस अवस्थां में अनिर्वा माना है जब कि व्योक्ति एवं समाज के आर्थिक सम्बअन्धों मे व्दान्द्‌ कष हो।

डॉ. अम्बे डकर भी यह मानते थे कि व्योक्ति एवं समान मे आर्थिक व्दवन्दअ हो सकते है। एंसी स्थिति मे उन्होंने भी राज्यआ हस्तोक्षेप पर बल दिया। उन्हों ने यह चेतवानी दी थी कि व्येक्तिगत क्षेत्र का स्ववमित्तउव कृषि एवं उद्योगों पर अधिक रहा तो भारत मे आर्थिक शोषण एवं अत्याचार का अन्त नहीं हो पायेगा। राज्यत को धन का एकाधिकार अथवा केन्द्रीयकरण नही होने देना चाहिए।

कृषि क्षेत्र मे डॉ.अम्बेृडकर कृषि सीमा एवं अन्यए खेती सम्बन्धी कानूनों का अधिक महत्वी नही मानते थे। इन सब बातों से उन श्रमिकों को कोई लाभ नही है, जिसके पास खेत नही है। गांवों मे रहनेवाले मुख्यभत गरिब, भूमिहीन इन कानूनों से लाभान्वित नही हो पायेंगे। भारत मे

अधिकांश ऐसे ग्रामीण हे,जिनके पास कृषि-योग्यध भूमि नही है अनेक परिवार केवल मजदूरी पर ही निर्वाह करते हे। आज नीति से इन लोगों को कोई लाभ नही हो पायेगा। डॉ.अम्बोंडकर ने सामूहिक खेती पर बल दिया है। कृषि को राज्या-उद्योग बनाना चाहिए। कृषि करने योग्यर जितनी भूमि है,उसका राष्ट्री यकरण होना चाहिए। उनके आर्थिक कार्यक्रम यह तृतीय अंग है जिनकी किसी भी प्रकार उपेक्षा नही की जा सकती है।

राज्य की और से कृषि-व्यकवस्थाउ डॉ.अम्बेडकर के अनुसार, निम्नालिखित पद्धतियों पर होनी चाहिए-

1.राज्या को चाहिए कि समस्तह कृषि-योग्यज भूमि को एक निश्चित मापदण्डी के अनुसार फार्मो (**Farms**) में विभाजित करें पुन:विभिन्नो परिवारों ने मिलकर बने हुये कृषक समूह मे ये फार्म विभाजित किये जाये। इन कार्यों के किसानों को यह मानना चाहिए कि-

क. ये फार्म सामूहिक फार्म है।

ख. ये फार्म राजकीय भाषाओं एवं शिक्षाओ के आधार पर चलेंगे एवं

ग. उत्पारदित धन बराबर तदनुसार विभाजित किया जायेगा।

2.फार्मों का वितरण गांव के किसानों में ही बिना किसी भेदभाव के होना चाहिए। विवरण इस प्रकार का हो कि न कोई जमीदार रहे न कोई नोकर किसान रहे और न कोई बिना भूमि का किसान रहे।

3. राज्य का यह कर्तव्यर होना चाहिए के वह इन फार्मो को सब प्रकार की पुंजी लगाये जैसे औजार बीज एवं जेल ताकि उत्पारदन बढें और किसानो की समृद्धी हो। सब किसानों को वैज्ञानिक ढंग से खेती सिखाना भी राज्य का कार्य होना चाहिए।

4. राज्य को यह अधिकार होगा चाहिए कि वह तदनुसार कर इत्या।दी कर लगाये और जो नियमों भंग करे,उन्हे दण्ड भी दे राज्य। उन व्ययक्तीं योंको भी दण्ड दे, जो उन फार्मों के विरूद्ध काम करे अथवा कृषि के कार्य की उपेक्षा की दृष्टि से देखें।

यदि हम व्यापक लाभकारी फल चाहते है तो भारत मे आर्थिक नियोजन मुख्यकत: कृषि के क्षेत्र मे लागू करना चाहिए। ऐसा करने के लिए डॉ. अम्बेकडकर वैधानिक आधार को वांछनीय मानते थे, हालाकि उसमें अनेक कठिनाईयाँ उत्पमन्न, हो सकती है। राज्यक- समाजवाद की स्थापना वह सामान्यप कानून से भी करना नही चाहते थे। वह देश के विधान मे इस कार्यक्रम को स्था न देना चाहते थे, ताकि उसे आसानी से बदला न जा सके। ऐसा करने कि पीछे एक उद्देश्य था। उन्हों ने कहा कि ‘’इसका अभिप्राय उस व्य क्तिगत स्वा।तन्त्र ता को दुसरे व्य क्तियों के अतिक्रमण से रक्षा करना है,जो कि मोलिक अधिकारों को बनाने का एक विषय है व्य क्गित स्वितन्त्रनता एवं समाज के आर्थिक ढांचे और रूप में बहुत गहरा सम्बनन्धत है, चाहे उसे प्रत्येऔक व्योक्ति भले ही न जान पाये। कुछ भी हो, दोनों मे एक वास्ताविक सम्बन्धन है।

डॉ. अम्बेनडकर के अनुसार यह बात तभी स्प्ष्ट होगी जब हम यह मान ले कि राजनैतिक प्रजातंत्र निम्नां कित बातों पर आधारित हे-

1.व्ययक्ति स्वतयं में एक साध्य-

2.व्ययक्ति के कुछ अपृथक अधिकार है,जिनकी सुरक्षा राज्या की करनी चाहिए।

3.किसी व्याक्ति को अवसर या सविधा प्राप्त करने के लिए अधिकारों से वंचित नहीं किय जायेगा। किसी व्य क्ति को करने के लिए अधिकारों से वंचित नही किया जाऐगा।

4.राज्य अनधिकृत व्यअक्ति को ग्रन्थक व्यकक्तियों के ऊपर शासन करने के लिए कोई अधिकार नही देना।

इन आधार वाक्यों के सहारे डॉ. अम्बेयडकर यह कहना चाहते थे कि कोई व्येक्ति की जो पुंजीवादी अर्थव्यावस्था से भलीभाति परिचित है, जानता है कि यह व्य वस्थाअ अपने व्यंक्तिगत लाभ के लिए राजनैतिक प्रजातन्त्रत के अन्तिम दो आधार वाक्यों का कोई मूल्यए नही समझती। साधन हीन व्यधक्ती इस व्व्वस्था् के शिकार बन जाते है। उनके सामने अनेक भय, भूखे मरने का भय, बच्चोंब की शिक्षा न मिल सकने का भय, मकान खो बैठने का भय, वस्त्रबहीन रहने का भय ऐसे कारण है, जिनकी वजह से गरीब लोग अपने मोलिक अधिकारी को बेच देते है। केवल इसलिए वे जीवित रहने के लिए काम चाहते है। पुर्ण अर्थव्यववस्थाल से ऐसा ही होता हे आरे व्य क्ति गुलाम बनकर रहते है।

जो लोग साधन सपन्न है, उनका कथन है कि मौलिक आधिकारों को वैधानिक रूप देना ही व्या‍क्तिगत स्वमतंत्रता को रक्षा करता है और जहा राज्यग व्यलक्तिगत एवं सामाजिक मामलों में हस्ततक्षेप नही करता वह शेष क्षेत्र **(Residue)** ही स्वततन्त्र ता है। यह ठिक है कि वह शेष क्षेत्र ही स्व्तन्त्र ता है, किन्तुन यह स्व तन्त्र ता सब व्यरक्तियों के लिए तो नही है। वह जमीदारों को लगान बढाने, पुंजीपतियों को काम के घण्टे बढाने एवं वेतन कम करने की स्वनतन्त्रजता है। इस स्वणतन्त्रबता से सार्वजनिक कल्यानण को बल नही मिलता। वह एकांगी वर्ग-व्व्वस्था है। कृषक को इसका लाभ नही मिलता है।

स्वाभाविक है कि किसी भी अर्थव्यवस्था मैं अधिक उत्पाकदन करने के लिए श्रमिकों की एक फौज भर्ती करनी पडती है तथा वैज्ञानिक पद्धती की कृषि करनी चाहिए। किसी को आवश्याक नियम भी बनाने पडते है ताकि औद्यागिक क्षेत्र में काम सुचारू रूप से चलता रहे। यदि राज्यत नियम नही बनाता तो पुंजी पतियों को कठिन हो जाये। पुंजी पतियोंव्दारा नियम निर्माण की स्थिति मे उन्ही का साम्राज्य् हो जाता है। वे अपनी इच्छानुसार ही सब कार्य करते है। इसलिए जिस राज्यत व्दा्रा हस्ताक्षेप न किये क्षेत्र को स्व तन्त्रिता कहते है, वह पुंजीपाति की एक

तानाशाही है। अत: इस क्षेत्र में उद्योगों का आधिक विस्तार करना सार्वजानिक हित मे निजी होगा संक्षेप मे निजी क्षेत्र (**Private Sector)** अधिक से अधिक बढाना और राज्य क्षेत्र (**Public Sector)** कम से-कम करना व्यऔक्तिगत स्व्तन्त्रा तथा हित का हनन करना है। राज्यम हस्तरक्षेप के बिमा धन का ठीक-ठीक विनकरण होना सम्भ व नही। मिश्रित अर्थ-व्व्स्थान का यह सैद्धांतिक स्वकरूप आज भारत म स्वी कार लिया जा रहा है।

डॉ.अम्बे्डकर का समाजवादी सिंद्धांत समाज के नैतिक एवं आध्याजत्मिक मुल्योंक के विरूद्ध नही है। यह व्यजक्तिगत स्वनतन्त्रैता का हनन नही करना और न पुंजीवादी अर्थ-व्य वस्था। का जड़ से अन्तन करना चाहता है। उनका समन्वियवादी सिंद्धांत समाज की भलाई के लिए निम्नालिखित तीन बातो को उचित समझता है।

1. उद्योग एवं कृषि की स्थापना समाज के दरिद्र वर्गों की आवश्यककताओ को पूरा करने के दृष्टिकोण से करना चाहिए।

2. सार्वजानिक भलाई के लिए उत्पादन के साधनों की देख-रेख राज्यों व्दालरा होनी चाहिए।

3. उत्पादन का ठीक-ठीक वितरण सबन्धिन व्याक्तियों के बिना किसी जाति एवं धार्मिक भेदभाव के होना चाहिए।

डॉ.अम्बे्डकर एक अन्यच विधि अपनाने का सुझाव देते थे। वह राज्यज एवं समाज शक्तिशाली वर्गो को स्वेवच्छाकचारी अधिकार प्रयोग करने का कोई अवसर नही मिलना चाहिए। इसका अर्थ है कि शक्तिशाली वर्ग आर्थिक क्षेत्र में गरीब तथा कृषक पर अत्या चार न करे। उनका सोषन न करें और आतिरिक्तर लाभ का अपहरण न करे। ऐसा तभी सम्भंव होगा,जब की धनी वर्गो (सावकार वगैरे) का आर्थिक क्षेत्र पर कम नियन्त्रण हो अर्थात वे अपनी मनमानी न कर सके।

यह सुझाव व्यनक्तिगत स्वोतन्त्राता की रक्षा करने का उत्तरम उपाय है। कृषक, मनुष्यव श्रम करते है उनके श्रम का उचित वेतन और भत्ता दिया जाना चाहिए। कृषक के उत्पाकदन को भी उचित मूल्य दिया जाना चाहिए। जिससे वह अपनी जीविका अच्छू से चला सके तथा भत्ता जीवन अच्छेल से बिता सके। उनके मौलिक अधिकारों का हनन नही होना चाहिए। आर्थिक क्षेत्र मे साधनहीन व्यनक्तियों को शिकार बनने से रोका जाना चाहिए। व्यनक्ति के व्दायरा व्यरक्ति का शोषण एक अनैतिक कार्य है।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि सुनियोजित अर्थ-व्यैवस्थार की सफलता के लिए वह आवश्यनक है कि इसे ढीला न छोडा जाये। इस व्यावस्था ल को स्थाययी बनाये जाये। संसदात्मजक प्रजानन्त्रस में उस स्था्यित्वा को उत्पन्नन नही कर सकती, जो कि सुनियोजित अर्थ-व्यिवस्थाक के लिए अत्यानवश्य क है। कारण यह हे कि प्रजातन्त्रय में सरकार समाजवादी कृषि सुधारो के पक्ष में होती है, तो दुसरी उसके विरूद्ध। प्रत्ये क सरकार अपनी- अपनी इच्छा्नुसार कानून बनाती है। एक समाजवाद के पक्ष में तो दुसरी उसके विपक्ष में। ऐसी अवस्थाम में सुनियोजित अर्थ-व्यवस्था से कोई लाभ नही हो पाता हे। इसलिए आर्थिक पक्ष को मजबूत करने के लिए महिला सामने आकर और बचत गट स्थापन करे उसके कई माध्य म से उद्योग शुरू करके अपनी समस्याओं को हल निकाल सकती है। तथा कुटूंबप्रमुख पर ज्यादा बोझा नही होगा।

इसलिए डॉ. अम्बेपडकर कहते थे कि वे लोग 'जो ढांचा समाजवादी अर्थ-व्यबवस्थाक के आधार पर चाहते है। इसकी सफलता के लिए सामान्य कानून का सहारा नही लेना चाहिए क्योंककि सामान्यस कानून सरकारों के परिवर्तन के कारण आये दिन बदलते रहते है। इन शीघ्र बदलने वाली सरकारों के उद्देश्यप राजनेतिक अधिक होते है। उनके यथार्थ आभिप्राय मालुम नही हो पाते है। एक राज्यनैतिक दल अपनी पूर्व सरकार के अच्छे-से-अच्छे कानून भी बदल देता है।'

अत: यह स्पष्ट- हे कि संसदात्मक राजनैतिक व्यवस्था प्रजातंत्रीय आर्थिक ढांचे की सुदृढता लाने में क्यों असमर्थ रहती है। आर्थिक सुद्‌ढता के लिए स्थायी कानून व्यिवस्थास का होना आवश्यक है, की रक्षा कर सके।

आर्थिक दृष्टि से सरकार ने आत्महत्याग्रस्त्‌ कृषको को बहुत बडा योगदान देती है। जिससे आत्महत्याग्रस्त कृषक के परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके तथा वे आर्थिक समृद्धि स्वतंत्रता दोनो ही चाहेगे। डॉ.अम्बेडकर राजनैतिक एवं आर्थिक संविधान के कानून व्दारर लाना चाहते थे। वे संविधान जिनमें केवल राजनैतिक ढांचे की व्यवस्था है, सैद्धांतिक रूप से ही स्वतन्त्रता की रक्षा करते है न कि व्यावहारिक पक्ष में भी। शोषण के विरूद्ध भी इस प्रकार के संविधानों द्वारा स्पनष्ट रूप से आर्थिक ढांचे को भी ठीक-ठीक निश्चित करना चाहिए ताकि सार्वजानिक सुरक्षा का प्रबन्ध किया जा सके। उन लोगों को संरक्षण मिले जो गरीब, दुर्बल, आत्महत्याग्रस्त एवं वृद्ध है।

प्रत्येक व्क्ति की मूलभूत आवश्यकताएं सन्तुष्ट हो। कोई व्य क्ति भूख से पीडित न हो और एक व्यिक्ति का मुल्य दुसरे व्य क्ति से आधिक न हो। प्रजानन्त्री मे इस सिद्धांत को पुर्णत:बल नही मिला। भारतीय समाज में आर्थिक ढांचे का शक्तिशाली लोगो के हाथों हाथ मे छोड दिये है, जो अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को नही निभाते है। जिसकी आज आवश्यकता है।

व्यावहारिकता की ओर ध्यान देना बहुत जरूरी है। परन्तु जो उसकी ओर ध्यान नही देते। उनका कहना है कि संविधान का कार्य केवल प्रजातन्त्र के राजनैतिक सिद्धांन्तों का प्रतिपादन करता है। उनको कार्यान्वित करना सरकार का काम है। शोषण और अत्याचार की रोकथाम करना सरकार का कर्तव्या बताते है। परन्तु। डॉ. अम्बेडकर कहते थे कि ये सब बाते आर्थिक सम्पणन्ता के बिना निरर्थक है। इनसे उन लोगों को कोई लाभ नही, जो साधनहीन है तथा जो परिवार आत्महतयाग्रस्त है। यदि मौलिक अधिकारों की रक्षा करती है यदि समाज को सबके लिए

न्यायोचित बनाना है तो राजनैतिक और आर्थिक ढांचे को संविधान के व्दारा प्रतिपादित करना चाहिए।

अन्त मे ऐसे व्यक्तियों का आदर्श समाज होना चाहिए जो आर्थिक मूल्यों को सबके हित के लिए प्रसारित करे। समाज के गरिब दुर्बल, वृद्ध एवं कृषक ऐसे लोगो को आत्महत्या न करना पडे और आर्थिक मूल्ये उनके लिए साधन-मात्र होने चाहिए। वे उनके लिए साध्य् नही हो। एक उच्चय जीवन के लिए उन्हे केवल साधन मानना हो ठीक है।

सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन पर जोर देना अत्यावश्य्क है। तथा आर्थिक कार्यक्रम का मुख्यर उद्देश पिछडी हुई आर्थिके विकास की गति को तीव्र करना ओर सार्वजानिक जीवन से आर्थिक भार को कम करना है। यह तभी सम्भरव हो सकता है, जब उन नीतियों का नया आधार तैयार किया आये। जो भारत के परिस्थिति के अनुकूल हो। वह आधार इतना प्रभावंशाली हो कि उसे कोई मिटा न सके।

भारत में गांवो की अर्थव्व्वस्था खेती पर निर्भर है। यदि गाँवों में रहने वाले सभी व्यिक्तयों के आर्थिक सम्पभत्रता के लिए कार्य करना है तो कृषि व्यववस्था् मे मौलिक परिवर्तन करने होगे। भारत में आज अर्थ-व्ययवस्था उतनी ही पिछडी हुई है जितनी कि वह कुछ वर्ष पहले थी। कृषि क्षेत्र में पंचवर्षीय योजनाओं के उद्देश्य अभी तक सफल नही हो पाये।

दोष सम्बफन्धित व्यृक्तियों का है लेकिन हो अपने उत्तसरदायित्वत को अन्य कारणों पर हाल देते है। वे अपने उत्तसरदायित को अन्य कारणों पर टाल देते है। वे वर्षा को दोषी ठहराते है। अथवा प्राकृतिक घटनाओं को यह आर्थिक रूप से सत्य भी हो सकता है, लेकिन डॉ. अम्बेडकर के अनुसार इसका मुख्य कारण हमारी पिछडी अर्थव्यवस्था है अर्थात गावों की दशा में कोई सुधार न होना। जावरे की अर्थ-व्यवस्था को बदले बिना हम भारत मे आर्थिक समुद्धि नही ला सकते''

गांवो में कृषि योग्यी का विवरण बिल्कुाल ही दोषपुणि है। बहुतसे परिवार भूमि के बिना आपना जीवन-निर्वाह करते है। वे भूमिहीन श्रमिकों को श्रेणी में आति है। उनकी आय इतनी कम है कि वे कठिनाईसे जीवित रहते है।उनके ऊपर अन्यी अत्याहचार भी किये जाते है। अपनी जीविका कमाने के लिए उनके पास पर्याप्तय साधन नही है। अपनी जीविका कमाने के लिए उनकेपास पर्याप्् साधन नही है। इस दृष्टि से वे परम्पलरावादी उत्त्म ग्राम्यस अर्थव्यीवस्था के शिकार बन जाते है।

इसलिए आज आर्थिक स्थिती इतनी दिवालिया है कि आर्थिक यथार्थवाद की सीमाएं उनसे मीलीं दूर है। अत: इसमें मौलिक सुधारों की अति आवश्यमकता है। भुमि सुधार इस प्रकार हो कि अधिक उत्पाधदन तथा न्याययोचित विवरण के मार्ग मे आने वाली सभी परम्पपरावादी कठिनाईयों दूर हो जाये। अधिक उत्पारदन के बीज जोये जाये। ताकि आर्थिक समृद्धि बढ सके तथा कृषक शोषण एवं अन्याजय की समाप्ति हो। लेकिन व्यदवहार मे इनकी प्राप्ति अभी तक सम्भयव नही हो पायी है। डॉ. अम्बेडकर ने व्या वहारिक पहलू पर अधिक जोर दिया है।

भारत की वर्तमान सरकार सहकारी फार्मो के पक्ष में है। सरकारी व्यतवस्था् में केवल वे ही लोग भाग ले सकेंगे अथवा लाभान्विम हो सकेंग, जिनके पास खेती करने योग्य भूमि है। भूमिहीन किसानों के लिए इसमें कोई स्थासन नही है। इसके लिए वही कठिनाईया बनी रहेंगी, जो आज है।2 प्रजातन्त्रीय समूहवाद व्य क्ति को उचित स्थाइन देना है, साथ ही सबकी समृद्धि फार्मों के कर्मचारी होगे और सभी उनके मालिक होंगे।इस प्रकार सामाहिक फार्मों से उस आर्थिक एवं सामाजिक अन्यागय का जो भारतीय गांव में विनमान है अन्यस हो सकेगा।

कृषकों की वर्तमान स्थिति जो आज है। वह बुद्ध-काल में भी थी। तभी तो बुद्ध ने ज्ञान समस्याआओं से. निपटने के लिए जो ‘कुटदन्त सुत्त में महाविजित जातक कथा में उपदेश दिया है कि और उपाय सुझाया है कि, राज्य तथा गांव में जो कृषि गोपालनं करना चाहते है तो इसे बीज

और भोजन प्रदान किया जाये। जो व्यावसाथ करना चाहते है उन्हे अनुदान दिया जाये, जो नौकरी करना चाहता है वेतन और भत्ताह दिया जाये।1 अगर ऐसा प्रत्येनक गांव राज्य मे हुआ तो कोई बेरोजगार नही रहेगा। क्यों कि बेरोजगार को रोजगार मिलेगा। ऐसा करने से कोई हिंसा नही करेगा, कोई लंटमार नही करेगा कोई आत्मऐहत्या नही करेगा। वर्तमान स्थिति में यह उपाय अगर लागू किया जाये तो कृषक को आत्ममहत्या नही करनी पडेगी। उसे अपनी जीविका कमाने के लिए यह पर्याप्त साधन उपलब्धी हो जाये तो उसे आत्माहत्याए नही करनी पडेगीद्य सरकार की तरु से उन्हेन मुआबजा मिलना चाहिए। खेती उपयोगी वस्तुयओं का वितरण होना चाहीए, जिससे वह अपना जीवन निर्वाहकर सकेगा।

केन्द्र सरकारकी तरफ से आत्मसहत्या ग्रस्तग परिवार को 'पंतप्रधान पॅकेज' नाम्की सहायता मिलती है। और सरकार से श्वेयती उपयोगी वस्तुओ का वितरण दिया जाता है। परन्तुक कृषक पर कर्ज का इतना ढेर होता है कि जो सहायता उसे सकरकार तरफ से दी जाती वह बहुत थोडी है। कृषक को सरकार की तरु से ऐसी सहायता देनी चाहिए जिससे वह अपना जीवन-निर्वाहकर सके।

कृषक को पर्याप्तर सहायता दी जाएगी तो उनके परिवार की समस्याजओं का हल निकल सकता है। सामाजिक एवं नैतिक दृष्टिकोण से कुटदन्त सुत्त को आर्थिक सिद्धांत आधुनिक परिस्थितियों के बिल्कुसल उपयुक्त है। डॉ.अम्बेआडकर ने कृषि को राज्यि-उद्योग बनाना चाहते थे। परन्तुत प्रतिक्रियावादी लोगों ने डॉ. अम्बेडकर के आर्थिक विचारों का खुलकर विरोध किया एसी कारण वह अपने आर्थिक प्रोग्राम को भारतके आधुनिक संविधान में सम्मिलित नही कर पाये।

भगवान बुद्ध का आर्थिक सिद्धांत बिल्कुरल मध्यकम-मार्गी है। डॉ. अम्बेडकर मित्रित अर्थव्यलवस्थाल के समर्थक थे, जो कि उनके सामाजिक मानववाद का भंग है।

भगवान बुद्ध और कार्ल मार्क्स् दोनों ही मानवता के सच्चेथ पुजारी थे, परन्तु दोनों की पद्धतियों भिन्ने है। मार्क्सकका दर्शन एकांगी रहे, जबाकि बुद्ध का दर्शन सर्वांगी है। मानव को संपूर्ण जीवन भौतिक एवं मानसिक तथा व्य क्तिगत एवं सामाजिक बौद्ध दर्शन का विषय है। उनकेधर्म में सज प्रकार के मुल्योंके लिए उचित स्थायन है, जिसमें सामाजिक स्वंतन्त्रुता एवं समता को उचित स्थाथन प्राप्तक है। यह धर्म् मानव-जीवन की सर्वांगीण प्रगाति में विश्वास रखता है। सन्तोनष यही है कि मनुष्यज दु:ख का स्वी कार करे और उनकी दूर दुखे का प्रयत्नयकरे।

बुद्ध के आदेश मनुष्य. की सहायता करता है। मानव जीवन की सर्वागीण प्रगति में विश्वा3स करताहै। इसीलिए बुद्ध का उपदेश आधुनिक परिस्थिति में मेल खाता है। कुटदन्तै सुत्तध मे जो उपाय बुप् ने बुलाये है वह वर्तमान परिसिथति मे लागू होते। जब मानवी जीवन सुखी होगा तब समाज मे शान्ति बनी रहेगी। दी बनिकाय नायक ग्रन्थो मे ब्रम्हिजाल सुत्तक में सभी पडे-पोधों को हानी नही पहुँचनी पडे-पोधों को हानी नही पहुँवनी चाहिए क्यों कि उसमें भी जीव होताहै। ऐसा बुद्ध का सन्देनश सर्व प्राणिमात्र, पडेपोधों की रक्षा करनी चाहिए किसी को भी पहुँचनी चाहिए।

ढाई हजार वर्ष पहले बुद्ध ने कृषकों को बेरोजगारों को जो उपायों का सुझाव दिया है। वह आज वर्तमान स्थिति में लागू होता है। उसी को आधार लेकर डॉ.अम्बेडकर ने भी जो सुझाव किया है वह आज लागू होते और गाँव राज्यम में शान्ति प्रस्थापित होगी तथा सब लोभ अपने अपने घर खुशहाल जिदंगी नियेंगे। उन्हेतकिसी कमा कर नही रहेगा। वह अपने बच्चों को गोद मे लेकर खुश रहेंगे।

***

उपसंहार

उपसंहार

बुद्ध काल मे समाज अनेक समस्याओं से घिरा हुआ था, बुराइयाँ फैली हुयी थी संसार मे दरिद्रता थी अर्थात कृषक के पास प्रायप्त खाद्द साम्रगी एवं आवास का कोई प्रबन्ध नही है इन आवश्यकताओं को सन्तुष्टि न होने पर मनुष्य का मानासिक सन्तुलन खराब हो जाता है तथा उसकी सामाजिक, राजनेतिक आर्थिक, धामिक, पारिवारिक स्थिति का उसके जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पडता है। धार्मिक कर्मकांड करने के लिए वित्त की आवश्यकता होती है वह पर्याप्त नही होती है इसलिए कृषक आत्महत्या करता है जिस मनुष्य में मन की शान्ति नही और बुध्दि पर भरोसा नही वह स्वयं एवं परिवार तथा समाज के लिए कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता है इसके अतिरिक्त गरिबी से अशिक्षा, बीमारियाँ और झगडे पैदा होते है।

बुद्ध काल में किसानों के मानवी सुखी जीवन का प्रायय आता है उस समय किसान की आर्थिक स्थिति का पता चलता है उनके आचरण भी मालूम होता है जैसे धनिय सुत्त के आधार पर हम कह सकते है कि उस समय किसानों की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक पारिवारिक स्थिती अच्छी थी बुद्ध के काल में ब्राम्हण भी खेती करने थे इसका भी हमे पता चलता है कृषिभारव्दाज खेती करता या तथा उनकी स्थिति का भी पता चलता है।

कुटदन्त सुत्त मे जो भगवान बुद्ध ने समस्या का कथन किया है एवं उस पर सुझाव दिया है न कोइ बेरोजगार रहेगा न कोई कृषक आत्महत्या करेगा सभी समस्याओं की संतुष्टि होना आवश्यक है इसका प्रत्यय हमें इस सुत्त मे आता है बुद्ध के विचार मानव कल्याण के लिए ही है उनके दर्शन आधार मानव-दु:ख है उनके दर्शन में चमत्कारी घटनाओं के लिए कोई स्थान नही है वास्तव में बुद्ध ने जीवन के वास्तविक तत्व पर अपना ध्या्न केन्दित किया कि मानव जीवन मे दु:ख है। मार्क्स ने भौतिक दु:ख की बात फिर कही, जबकि बुद्ध ने भौतिक एवं मानसिक दोनो

दु:खों का अन्तर करने पर बल दिया है बुद्ध ने दु:ख का एक विशेष अर्थ बताया और जीवन भर प्रयत्न करते रहे उन्होंने बहुत से आत्मत्याग भी किये ताकि संसार कि कठिनाइयों को वह ठीक-ठीक समझे।

बुद्ध का दर्शन सर्वांगी है मानव का सम्पूर्ण जीवन भौतिक एवं मानसिक तथा व्यक्तिगत एव सामाजिक बुद्ध दर्शन का विषय है । उनके विचार में सभी प्रकार के मुल्यों के लिए उचित स्थान है। बुद्ध के विचार में सन्तोष एवं ताडना दोनों ही है सन्तोष यही है कि मनुष्य दु:ख को स्वीकार करे और उसको दूर करने के लिए प्रयास करे। इस प्रकार दु:ख का अन्त हो सकता है ताडना इस प्रकार की है कि मनुष्य भौतिक एवं क्षणिक सुखों में फंसे क्योंकि इनमें फसने से व्यक्तिगत और सामाजिक उत्तंरदायित्व भूल जाता है जो कि बुद्ध के विचार की एक मुख्य विशेषता है इनके विचार मनुष्य की यही पर सहायता करते है इसीलिए कुटदन्त सुत्त में जो समस्या है और उन पर जो उपाय बुद्ध ने बताये है उसका वर्तमान स्थिति में फिट बैठता है।

डॉ. अम्बेडकर ने इन समस्याउओं पर जो सुझाव दिये वह बुद्ध के विचार से ही प्रेरित होकर जताये है उन्होंने और एक बात हमारे सामने रखी है वह भूमि को एक सामाजिक प्रतिष्ठा का अंग मानना चाहिए सामूहिक फार्मों के सन्दर्भ में डॉ. अम्बेडकर ने बताया कि आर्थिक शोषण (सावरकार से) एवं सामाजिक अन्याय जो विद्यमान है उनका अन्त हो सकेगा उनहोंने उद्योग का राष्ट्रीयकरण करने की बात कहा है सभी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण नही होना चाहिए वे व्यक्ति जो राष्ट्र एवं सामाजिक हित मे उद्योग चलाना चाहे उन्हे ऐसा करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहीए डॉ. अम्बेडकर ने कृषि को राज्य-उद्योग बनाना उचित समझा है परन्तु इसका कुछ लोगों ने खुलकर विरोध किया इसी कारण वह अपने आर्थिक कार्यक्रम को भारत के आधुनिक संविधान में समिमलित नही कर पाये।

सामाजिक एव नैतिक दृष्टिकोण से डॉ. अम्बेडकर अर्थिक सिध्दांत आनुनिक परिस्थितियों में बिल्कुल उपयुक्त है सामाजिक एकता और दृढता तभी सम्भव हो सकती है जब अच्छें व्यक्ति की प्रगति के प्राप्त साधन हो इन बातो का कहां तक पालन होना है अधिकांश किसी सरकार के अच्छे और सुव्यावस्थित कार्यों पर ही निर्भर रहता है। कृषकों को प्रायप्त साधन सामग्री उपलब्ध् कराना सरकार का कार्य है कुटदन्त सुत्त मे तथागत बुद्ध ने कहा है कि राजा ने प्रजा का खयाल रखना चाहिए जब ऐसा होगा तब राजा और प्रजा सुखी आनंदी जीवन जीयेंगे।

कुटदन्त सुत्त मे हमे यहा भी देखने को मिलता है कि यज्ञ करने के लिए पशूओं कि बलि दी जाती थी इसका मतलब यह है कि बुद्ध काल मे यज्ञ, होम-हवन की परम्परा थी और उस यज्ञ में पशुओं कि प्राणियों कि बली दी जाती थी उस समय की सामाजिक परिस्थित ज्ञात होती है भगवान बुद्ध ने प्राणि हिसा का विरोध किया है क्योंकि उनकी शिक्षा करूणा अहिंसा तथा मैत्रीक पर आधारित है इसीलिए बुद्ध ने प्राणि हिंसा पशु हिंसा पर रोंक लगाई तथा वधस्तंभ के लिए वृक्ष की कटाई कि जाती थी। बुद्ध ने मना किया है कयोंकि वृक्ष काटने से पर्यावरण का सन्तुलन बिगडता है हमे इस बात का भी पता चलता है कि बुद्ध ने पर्यावरण की सन्तुलित रखने की बात कही है।

इसलिए यज्ञ करते सम्य किसी भी प्रकार हिंसा न हो, पर्यावरण की हानी न हो, इसलिए बुद्ध ने अहिसामय अल्पहसाम्ग्री का यज्ञ करने को कहा है। जैसे-दान यज्ञ त्रिशरण, यज्ञ शिक्षापद यज्ञ, शील यज्ञ, समाधि यज्ञ तथा प्रज्ञा यज्ञ करने की बात कही है जिससे कोई प्राणि हिंसा नही होगी बल्कि एसे यज्ञ करने से मनुष्य के जीवन में शान्ति होगी अर्थात समाज में शान्ति अहिसा मैत्रीक करूणा का सन्देश देने का कार्य करने थे बुद्ध ने अहिंसा मय एवं अल्पासामग्री का यज्ञ करने की बात कुटदन्त ब्राम्हदण से काही है । और जो सात सौ बैलों, सात सौ बछडों, सात सौ बकरों, सात सौ भेड़ों को छोड दिया जीवनदान दिया इससे हमें यही मालुम होता है। बुद्ध की

शिक्षा करुणा आधार अहिसा करुणा तथा मैत्री भावना है। सारा संसार भय मुक्त होगा सब अपने-अपने गाँव, जनपद में अपने घर में सुखी और आनन्दी जीवन अपने बच्चो के साथ जीयेंगे।

आधुनिक वर्तमान स्थिति मे बुद्ध के विचारों को देखा जाये तो बिल्कुल यह विचार लागू होते है ऐसा कहने से कोई अतिशयोक्ती नही होगी। संक्षेप में बुद्ध ने नवीन समाज की स्थापना की और सामाजिक एवं आध्यात्मिक सुधारों का आविर्भाव किया जिनकी उस समय के सभी वर्गों की आवश्यकता थी। उस समय बुद्ध ने सामाजिक सुधार, राजनैतिक चेतना और धार्मिक सुधार किये।

***

संदर्भ सूची

संदर्भ सूची

1. दिघमिकाय- अनु. सांकृत्यायन राहुल, काश्यप जगदीश, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली

2. मजिस्म निकाय - अनु. सांकृत्यायन राहुल, काश्यप जगदीश, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली

3. बुद्ध का समाजदर्शन – ले.डॉ.धर्मवीर- सम्यक प्रकाशन- नई दिल्ली

4. सर्वोत्तम भूमिपुत्र : गौतम बुद्ध – साकुखे आ.ह.- लोकमत प्रकाशन- सातारा

5. प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म – ले.सराओं- प्रो.के. टी.एस., हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

6. जाति विध्वंसक भगवान बुद्ध- ले.डॉ.धर्मवीर- सम्यक प्रकाशन- नई दिल्ली

7. बौद्ध- दर्शन- मीमांसा-ले.उपाध्याय, आचार्य बलदेव – वाराणसी

8. भारतीय संस्कृति और अहिंसा - ले.कोसाम्बी धर्मानन्द- सम्यक प्रकाशन- नई दिल्ली

9. बुद्ध और उनका धम्म – अनु.कौसल्यायन भदंत आनंद, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, नॅशनल असेसिएशन ऑफ इंजीनियर्स- नागपुर

10. बौद्ध संस्कृति- ले.सांकृत्यायन, महापंडित राहुल, सम्यक प्रकाशन- नई दिल्ली

11. धम्मपद- ले.सिंह, डॉ. महिपाल 'महीप', सम्यक प्रकाशन- नई दिल्ली

12.थरे गया – अनु.संपा.डॉ.विमलकृती- सम्यक प्रकाशन- नई दिल्ली

13.अथिधम्मत्थसंड हो - अनु.कौसल्यायन भदंत आनंद, - बुद्धभूमि प्रकाशान, नागपुर

14. बुद्ध धम्म का सार- ले. नरसू, पी. लक्ष्मी, अनु. सत्य प्रकाश, धम्ममित्र सम्यक प्रकाशन- नई दिल्ली

15. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का समाजदर्शन- ले.जप्थ, डॉ. डी.आर, समता साहित्य बदन- जयपुर

16. पाली हिन्दी कोश- ले. कौसल्यायन भदंत आनंद, राजकमल प्रकाशन – नई दिल्ली

17. विनयपिटक- अनु. सांकृत्यायन, महापंडित राहुल, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली

18. बुद्धकालीन भारतीय भूगोल- ले. उपाध्याय, डॉ. भरतसिंह, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग-इलाहाबाद

19. भगवान बुद्ध, बौद्ध धर्म और उनका दर्शन – ले.उपाध्याय, प्रो. जगननाथ, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली

20.कृषि वन-वृक्ष, पर्यावरण और बौद्ध धम्म – सुमन डॉ.बनवारीगल, सुमन, डॉ. मंजु, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली

21. बुद्धचर्चा – ले. सांकृत्यायन राहुल, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली

22. सध्दम्मसड़.हो- संपा एवं अनु.-सिदार्थ, मोतीलाल बनारसीदास, बंगला रोड, दिल्ली

परिशिष्ट

जहर पीकर किसान ने की आत्महत्या

संवाददाता | हिंगणघाट.

तहसील के ग्राम कानगांव निवासी किसान सुनील नामदेवराव मड़ावी (35) ने अतिवृष्टि तथा फसल न होने से परेशान होकर शुक्रवार को जहर पीकर आत्महत्या कर ली।

कानगांव निवासी किसान सुनील मड़ावी के पास एक हेक्टेयर 31 आर खेती है। उन्होंने खेत में सोयाबीन तथा कपास फसल की बुआई की थी। किंतु उन्हें सिर्फ 2 क्विंटल सोयाबीन व आठ क्विंटल कपास की उपज हुई। उन्होंने बैंक ऑफ इंडिया शाखा से ४० हजार रुपए का कर्जा लिया था। जिसे चुकाने में वे असमर्थ थे। कर्ज का बढ़ता बोझ व प्रतिवर्ष फसल न होने से किसान सुनील मड़ावी ने 14 फरवरी की रात में परिवार के सभी सदस्य के सोने के बाद जहर पीकर आत्महत्या कर ली। वह अपने पीछे पत्नी कविता मड़ावी (30), पुत्र निखील (7), पुत्री अवंतिका (5) को छोड गए है। मृतक किसान सुनील मड़ावी के परिवार को शासन से मदद करने की मांग नागरिको ने की है।

18 फरवरी 2014 के दैनिक भास्कर समाचार

शेतकऱ्याची आत्महत्या

वर्धा : घरातून निघून गेलेल्या शेतकऱ्याचा त्याच्याच शेतातील विहिरीत मृतदेह आढळला. दीपक माधव शिंदे (५६) रा.बेलगाव या शेतकऱ्याने विहिरीत उडी घेवून आत्महत्या केली. याची माहिती त्याच्या भावाने खरांगणा पोलिसांना दिल्यानंतर घटनेचा पंचनामा करण्यात आला. ही घटना सोमवारी दुपारी ३.३० वाजता उघडकीस आली.

पोलीस सूत्रानुसार, दीपक घरातून निघून गेल्याने कुटुंबीय त्याचा शोध घेत होते. दरम्यान त्याच्या भावाला शेतकऱ्याचा मृतदेह विहिरीत आढळला. यंदा झालेल्या अतिवृष्टीने व अवकाळी पावसाने शेतकऱ्याचे पीक उद्ध्वस्त झाले. खरीप हंगाम अतिवृष्टीने प्रभावित झाला यामुळे शेतकऱ्यांना रबी हंगामाची अपेक्षा होती. मात्र ऐन पीक काढण्याच्या वेळी गारपीट व वादळीपावसाने शेतकऱ्याचे हे स्वप्न धुळीस मिळविले. यामुळे शेतीच्या उत्पन्नावर केलेला खर्चही व्यर्थ गेला. कर्जाचा डोंगर असताना असमानी संकटाने शेतकरी हवालदिल झाला आहे. यामुळे जिल्ह्यात शेतकऱ्याच्या आत्महत्या वाढतच आहे. नुकसानीचे सर्वेक्षण करून शेतकऱ्यांना आर्थिक मदत मिळाली नाही. यामुळे शेतकरी पूर्णतः खचल्याने याकडे लक्ष देण्याची मागणी आहे. (स्थानिक प्रतिनिधी)

BANK PO/CLERK
4 DAYS FREE DEMO
(Reg. Must by Phone)
New Batch Start from 28 Jan.
No Formulae
Only Short Tricks
LOGIC
Branches :- Nadanvan, Burdi
MM Publicity

बालसंगोपन योजना लालफितीत अडकली

आत्महत्याग्रस्त कुटुंबातील मुला-मुलींचे प्रश्न गंभीर

प्रतिनिधी, अमरावती

नापिकी, कर्जबाजारीपणामुळे आत्महत्या करणाऱ्या शेतकऱ्यांच्या मुलांसाठी विदर्भातील आत्महत्याग्रस्त सहा जिल्ह्यांमध्ये बालसंगोपन योजना राबवण्यात यावी, यासाठी सातत्याने पाठपुरावा केल्यानंतरही या योजनेची अंमलबजावणी लालफितशाहीत अडकली असून पितृछत्र हरवलेल्या लहान मुलांच्या शिक्षण आणि उपजिविकेचा प्रश्न गंभीर वळणावर पोहोचला आहे.

विदर्भातील अमरावती, यवतमाळ, अकोला, वाशीम, बुलढाणा आणि वर्धा या सहा जिल्ह्यांमध्ये शेतकऱ्यांच्या आत्महत्यांचे प्रमाण सर्वाधिक असल्याने २००६ मध्ये केंद्र आणि राज्य सरकारकडून 'पॅकेज' जाहीर करण्यात आले. विविध योजनांची अंमलबजावणी झाल्याचे सरकारकडून सांगण्यात येत आहे. मात्र, शेतकऱ्यांच्या विधवा आणि लहान मुलांच्या भवितव्याचा प्रश्न कायम आहे. पाच वर्षांपूर्वी बुलढाणा येथील लिव्ह अॅन्ड लेट लिव्ह चॅरिटेबल संस्थेने शेतकरी आत्महत्याग्रस्त सहा जिल्ह्यांमध्ये सर्वेक्षण केले होते. प्रत्यक्ष शेतकऱ्यांच्या घरी जाऊन १८ वर्षे वयापर्यंतच्या मुला-मुलींच्या स्थितीविषयी माहिती त्यावेळी नोंदवण्यात आली होती. महिला व बालविकास विभागाच्या बालसंगोपन योजनेचा लाभ या मुला-मुलींना मिळावा, अशी मागणी संस्थेने केली होती आणि सुमारे २ हजार १३३ पात्र मुलांचा प्रस्ताव शासनाकडे सादर केला होता. तत्कालीन महिला व बालविकासमंत्री दिवंगत सुभाष झनक यांनी यासंदर्भातील प्रस्ताव रीतसर प्रधान सचिवांमार्फत आयुक्तालयाकडे पाठवला होता.

आत्महत्याग्रस्त सहा जिल्ह्यांमधील महिला व बालविकास अधिकाऱ्यांचे अहवाल मागवले होते. बालसंगोपन योजना आत्महत्या करणाऱ्या शेतकऱ्यांच्या मुलांसाठी कशी आवश्यक आहे, असे विवेचनही त्यावेळी करण्यात आले होते. सुभाष झनक यांनी हा प्रस्ताव मंजूरही केला होता. मात्र, महिला व बालविकास विभागातील काही अधिकाऱ्यांनी या प्रस्तावाच्या मंजुरीनंतरही शुक्राचार्यांची भूमिका वठवल्याचे आता स्पष्ट झाले असून प्रस्तावाच्या मंजुरीसाठी तीन मंत्र्यांनी, चार खासदारांनी, विरोधी पक्षनेते आणि जवळपास पंधरा आमदारांनी विनंती करूनही या योजनेची अंमलबजावणी शेतकरी आत्महत्याग्रस्त सहा जिल्ह्यांमध्ये होऊ शकली नाही, असे लिव्ह अॅन्ड लेट लिव्ह चॅरिटेबल संस्थेचे म्हणणे आहे.

या संस्थेने प्रस्तावावर अंमलबजावणी व्हावी, यासाठी वरच पाठपुरावा केला, पण मंत्रालयातून कोणतीही हालचाली झालेल्या नाहीत. प्रस्ताव मंजूर होऊनही अधिकाऱ्यांनी विदर्भातील शेतकऱ्यांच्या विधवांची आणि अनाथ मुलांची क्रूर चेष्टा चालवली आहे, असा आरोपही संस्थेने केला आहे. एकप्रकारे हा हक्कभंगच असून पुन्हा एकदा विदर्भावर अन्याय करण्यात आल्याचे संस्थेचे म्हणणे आहे. हा प्रस्ताव मंजूर झाल्यास विदर्भातील सुमारे २ हजार मुलांच्या शिक्षणाचा, त्यांच्या संगोपनाचा प्रश्न मार्गी लागू शकतो आणि त्यांच्या भावी आयुष्याला चांगली दिशा देण्याचा प्रयत्न होऊ शकतो. ज्यांनी आत्महत्या पाहिल्या नाहीत, कर्त्या पुरुषाच्या आत्महत्येनंतर कुटुंबाची कशी वाताहत होते, हे ज्यांना माहीत नाही, ज्या मुला-मुलींचे वय खेळण्या-बागडण्याचे आहे, ते कामावर जाऊन घराचा भार कसा सोसतात, हे ज्यांनी पाहिले नाही, त्यांना या विषयाचे महत्त्व कळणार नाही. संवेदनहिनतेचाच हा प्रकार असल्याचे या संस्थेने म्हटले आहे. यासंदर्भात महिला व बालविकासमंत्री वर्षा गायकवाड यांना निवेदन पाठवण्यात आले असून शेतकरी आत्महत्याग्रस्त जिल्ह्यांमध्ये बालसंगोपन योजनेची त्वरेने अंमलबजावणी करावी, अशी मागणी निवेदनात करण्यात आली आहे. या प्रश्नाकडे लक्ष वेधण्यासाठी येत्या २६ जानेवारीला विभागीय आयुक्त कार्यालयासमोर एक दिवसाचे लाक्षणिक उपोषण करण्याचा निर्णय संस्थेने घेतला आहे.

सोयाबीन गेले, कपाशीचे उत्पादनही घटले : शेतकऱ्यांचे हिवाळी अधिवेशनाकडे लक्ष

शेतकऱ्यांना मदत मिळणार काय?

सोयाबीन सवंगलेच नाही

[illegible]

नैसर्गिक प्रकोपाने शेतकरी हतबल; पिकांची नासाडी

प्रशासनाचे दुर्लक्ष : सर्वेक्षणाची मागणी

रोहणा : नैसर्गिक प्रकोपाचा एखाद्या झटका समजण्यासारखा असला तरी सन २०१३-१४ या वर्षात खरीप आणि रबी अशा दोन्ही हंगामात शेतकऱ्यांना नैसर्गिक प्रकोपाला बळी पडावे लागले. निसर्गाच्या सातत्यपूर्ण व तीव्र आक्रमणाने शेतकरी वर्ग पुरता खचला आहे. निसर्ग आपले रौद्ररुप असेच धारण करीत राहिला तर अन्नधान्याचा तुटवडा भासेल अशी भीती शेतकऱ्यात व्यक्त करण्यात येत आहे. या नुकसानीनंतर प्रशासनाने त्वरीत पावले उचलून शेतकऱ्यांना मदत करण्याची मागणी होत आहे.

यावर्षी जुलै महिन्यात महाराष्ट्रात झालेल्या अतिवृष्टीने खरीपातील शेतपिकांची मोठी हानी झाली. लाखो मातीची घरे जमीनदोस्त झाली. शेतजमीन वाहून गेल्या, शेतात रेती गोटे येऊन पडून जमीन शेतीयोग्य राहिली नाही. कित्येक दुभती जनावरे वाहून गेली. त्या धक्क्यातून बळीराजा सावरत नाही तोच सततच्या पावसाने सोयाबीनच्या ओल्या शेंगांनाच कोंब फुटून सोयाबीनचे संपूर्ण पीक नष्ट झाले. जे काही सोयाबीन हाती आले ते पडत्या भावाने विकण्याशिवाय शेतकऱ्यांजवळ पर्याय नव्हता.

कापूस अतीपावसाने कधीच पिकत नाही हा अनुभव शेतकऱ्यांना यंदाही आला. कोरडवाहू जमिनीत कापसाला एकरी दोन तीन क्विंटलपेक्षा अधिक आराजी लागली नाही. केलेला खर्चही भरुन काढू शकत नसल्याने कापूस उत्पादक शेतकरी देखील हतबल आहे. निसर्गाचे धक्के सहन करण्याची सवय झालेल्या शेतकऱ्यांनी खरीपातील तुट रब्बीत भरुन निघावी म्हणून शेतकऱ्यांनी चना, गहू व पालेभाज्यांची मोठ्या प्रमाणात लागवड केली. सदर पिकांवर शेतकऱ्यांचा संपूर्ण खर्च झाला.

हरबरा व गहू काढणीला आलेला असताना २२ फेब्रुवारी पासून महाराष्ट्रात वादळी पाऊस व गारांचा वर्षाव होत असल्याने गहू, हरबरा, भाजीपाला, डाळींब, संत्रा, मोसंबी ही पिके मोठ्या प्रमाणात नष्ट झाली. तर तूर या पिकालाही काही प्रमाणात फटका बसला आहे. सदर वातावरण किती दिवस राहील हे सांगणे कठीण झाले असून निसर्गाच्या प्रकोपाने संपूर्ण शेतकरी पूर्णतः खचला आहे.

मागील कित्येक वर्षापासून शेतकरी आपला अनुभव सांगतात, गारपीट व अवकाळी पाऊस यापूर्वी यायचा पण यावर्षी दररोज येणारा वादळी पाऊस व गारपीट निसर्ग बदलण्याचे अशुभ चिन्ह असल्याचे मत ते व्यक्त करतात.

शेतकऱ्यांना या गर्तेतून बाहेर काढण्यासाठी शासनाने उपाय योजना करणे गरजेचे आहे. याकरिता त्वरित नुकसानग्रस्त भागाचे सर्वेक्षण करणे आवश्यक आहे.(वार्ताहर)

निवडणूक लांबणीवर टाकून शेतकऱ्यांना मदत द्या

मुख्य निवडणूक आयुक्तांना निवेदन : सातबारा कोरा करून नवीन कर्ज उपलब्ध करून देण्याची मागणी

वर्धा : भारतात अनेक राज्यात गारपिटीने हजेरी लावून शेतकऱ्यांच्या तोंडातील घास पळविला आहे. पहिल्या पिकाच्या आघातातून सावरण्याचा प्रयत्न करणाऱ्या शेतकऱ्यावर निसर्गाने दुसरा आघात केला. यात शेतकऱ्यांचे लाखो रुपयांचे नुकसान झाले आहे. यामुळे निवडणूका लांबणीवर टाकून आर्थिक मदत जाहीर करावी, अशी मागणी जिल्ह्यातील शेतकऱ्यांनी केली आहे. याबाबत जिल्हाधिकाऱ्यांमार्फत मुख्य निवडणूक आयुक्तांना निवेदन सादर करण्यात आले आहे.

देशात ७५ टक्के लोक शेती व शेतीशी निगडीत व्यवसाय करतात. या देशातील अर्थशास्त्रज्ञ देशाला सल्ले देण्याच्या गप्पा मारतात आणि मूळ अर्थशास्त्रापासून दूर पळतात. अर्थशास्त्राचे साधं-सुधं गणित या अर्थशास्त्रांना माहिती नाही.

निवेदन सादर करताना विविध गावातील शेतकरी.

राजकारणी, अर्थशास्त्रज्ञांच्या डोक्यात काय पिकते यापेक्षा महत्त्वाचे आंतरराष्ट्रीय बाजारात काय खपते, हे महत्त्वाचे आहे. अर्थशास्त्रज्ञ, राजकीय पक्षांना हे कळू नये, ही शोकांतिकाच म्हणावी लागेल. जगात केवळ अन्नाची अधिक गरज आहे. त्यासाठी सर्वात पोषक वातावरण आपल्या देशात आहे; पण शेतीला उद्योगाचा दर्जा देऊन न्याय देण्याचा प्रयत्न कोणत्याही राजकीय पक्षाकडून होत नाही. देशातील नैसर्गिक आपत्ती हे राष्ट्रीय संकट असून यात निवडणूक आयोगाने त्वरित निर्णय घेऊन लोकसभेची निवडणूक लांबणीवर टाकावी आणि शेतकऱ्यांना आर्थिक मदत जाहीर करावी, अशी मागणी निवेदनातून करण्यात आली.

निवडणूक आयोगाने मतदार असलेल्या शेतकऱ्यांच्या मागण्यांचा विचार करून आर्थिक मदत मिळेपर्यंत निवडणूका घेऊ नयेत. शेतकऱ्यांचा संपूर्ण सातबारा कोरा करून नवीन वर्षासाठी बियाणे, खत व कर्ज द्यावे, अशी मागणीही निवेदनातून करण्यात आल्यात. निवेदन सादर करताना [illegible] (बोरा), [illegible] उपस्थित होते. (कार्यालय प्रतिनिधी)

अवकाळी पावसामुळे रबी पिकांवरही संक्रांत

◆ नारायणपूर : परिसरात आलेल्या अवकाळी पाऊस व ढगाळ वातावरणाने रबी हंगामातील पिकेही धोक्यात आली आहेत. परिसरातील महत्त्वाचे असलेले हरभऱ्याचा पिकाचे मोठ्या प्रमाणात नुकसान झाले आहे. [illegible] आदी गावात हरभरा, गहू, तुरी, [illegible] आदी पिके घेतली जातात. [illegible] पण गत आठ दिवसापासून अवकाळी पावसाचा [illegible] [illegible] शेतकरी चिंतेत आहेत. [illegible] अतिवृष्टीने शेतकरी हवालदिल झाला. पिकांचे मोठ्या प्रमाणात नुकसान झाले. [illegible] शासकीय मदत मिळाली, पण अनेक शेतकरी मदतीपासून वंचित आहे. आता अवकाळी पावसाने शेतकऱ्यांची झोप उडवली आहे.

अतिवृष्टीच्या सर्वेक्षणात घोळ

चौकशीची मागणी : शेतकरी मदतीपासून वंचित

वर्धा : अतिवृष्टीचे सर्वेक्षण करताना शासकीय कर्मचाऱ्यांनी केलेल्या चुकींचा परिणाम शेतकऱ्यांना भोगावे लागत आहे. या चुकीच्या नोंदीमुळे शेतकरी शासकीय मदतीपासून वंचित आहे. याचा फटका सहन करणाऱ्या रोहणा शिवारातील शेतकऱ्यांनी या प्रकाराची चौकशी करण्याची मागणी केली आहे. या मागणीचे निवेदन तहसीलदार आर्वी यांना देण्यात आले.

निवेदनानुसार, यावर्षीच्या खरीप हंगामात अतिवृष्टीने शेतकऱ्यांवर दुबार पेरणीचे संकट आले. काहींच्या शेतातील पिके सडली. यानंतर आलेल्या पिकांवरही रोगाचे आक्रमण झाले. यातून वाचलेल्या पिकांच्या काढणीच्या वेळी आलेल्या पावसाने शेतकऱ्याचे उत्पन्नही वाया गेले. शेतीवर [illegible]ल्या खर्चाची रक्कम शेतकऱ्याला या हंगामात मिळाली नाही.

यानंतर शेतकऱ्यांना शासनाने आर्थिक मदत जाहीर केली. नुकसानीचा आढावा घेण्यासाठी शासनाकडून चमू नेमण्यात आली होती. मात्र या कर्मचाऱ्यांनीही कामात कुचराई केल्याने शेतकऱ्यांच्या पदरी उपेक्षाच आली. रोहणा येथील शेतकरी दादाराव पाळेकर हे अल्पभुधारक शेतकरी आहे. मात्र तलाठ्याच्या चुकीच्या सर्वेक्षणामुळे सदर शेतकरी आजही खरीप हंगामातील मदतीपासून वंचित आहे. सदर शेतकरी याने याबाबत तलाठ्याकडे जावून विचारणा केली असता त्याला अपमानस्पद वागणूक देण्यात आली. शिवाय उद्धटपणे उत्तरे देवून परत घालविण्यात आले.

येथील तलाठी बरेचदा कार्यालयात उपस्थित नसतो. त्यामुळे रोहणा शिवारातील शेतकऱ्यांची कामे प्रलंबित आहेत. साध्या प्रमाणपत्रासाठी कार्यालयात वारंवार हेलपाटा मारण्याखेरीज शेतकऱ्यांपुढे पर्याय नसतो. या प्रकरणाची चौकशी करून वंचित शेतकऱ्यांना त्वरीत मदत मिळवून द्यावी, अशी मागणी निवेदनातून केली. (स्थानिक प्रतिनिधी)

तलाठी गैरहजरच

◆ रोहणा येथील तलाठी हे कार्यालयात उपस्थित नसतात. यामुळे शेतकऱ्यांना त्यांच्या घरी जावे लागते. एखादे प्रमाणपत्र मिळवायचे असेल तर बऱ्याच हेलपाटा मारण्याशिवाय काही पर्याय नसतो.

प्रतीक्षा कायमच : कारवाईची मागणी

अतिवृष्टीच्या मदतीपासून शेतकरी वंचित

आकोली : वर्धा तालुका कृषी विभागांतर्गत आंजी(मोठी) साझातील मौजा झोरली शिवारातील शेतकरी अतिवृष्टीच्या मदतीपासून वंचित आहे. आजवर अवघ्या दोनच शेतकऱ्यांना अतिवृष्टीचा लाभ मिळाला आहे. कर्मचाऱ्यांच्या गलथान कारभाराने शेतकरी मदतीपासून वंचीत आहे.

हा प्रताप कृषी विभागातील कर्मचाऱ्यांनी केल्यामुळे शेतकरी वर्गात याबाबत असंतोष आहे. शेतकऱ्यांनी दोषींवर कारवाई करण्याची मागणी संबंधित विभागाकडे केली आहे. अशोक लाखरीया व सुकळी(बाई) येथील शेतकऱ्यांनी केली आहे. सुकळी(बाई) येथील अनेक शेतकऱ्यांची शेती झोरली शिवारात आहे. यावर्षी झालेल्या अतिवृष्टीने

कारवाईची मागणी

- असाप्रकारे निवडक शेतकऱ्यांना मदत देऊन महसूल व कृषी विभागाने शेतकऱ्यांच्या जखमेवर मीठ चोळले आहे. शेतकऱ्यात याबाबत असंतोष व्यक्त करण्यात येत आहे. संतप्त शेतकऱ्यांनी दोषींवर कारवाईची मागणी केली आहे. तसेच ज्या शेतकऱ्यांना आजवर मदत मिळाली नाही त्यांना तातडीने मदत जाहिर करण्याची मागणी केली आहे.

अनेकांची शेती खरवडून गेली. पिके पिवळी पडून शेतकऱ्यांना मोठा आर्थिक फटका सहन करावा लागला. शेती खरवडून गेल्यामुळे शेतात खड्डे पडले. घरात वाती एकदा कापूस आला नाही, तर सोयाबीन सवंगण्याची वेळच शेतकऱ्यांवर आली.

ही विकट परिस्थिती अतिवृष्टीने ओढवली. शेतकऱ्यांना मदतीचा हात द्यावा म्हणून शासनाने कृषी सहाय्यक, ग्रामसेवक व तलाठी यांची संयुक्त चमू नेमली. चमूने प्रत्यक्ष शेतावर जाऊन पंचनामे करण्याचे आदेश दिले. पण आदेशाचे तंतोतंत पालन करण्यात आले नाही. त्यामुळे शेतकरी मदतीपासून वंचित राहिले. तलाठी

> प्रत्येक शेतावर जाऊन पंचनामे केले आहे. सरसकट सर्वांची नावे मदतीच्या यादीत आहे. पुढे-पुढे बँकेत अतिवृष्टीची मदत जमा होईल.
>
> —बी. बी. गोटे, तलाठी, आंजी(मोठी)

म्हणतात प्रत्यक्ष शेतावर जाऊन पंचनामे केले व तसा अहवाल सादर केला. असे आहे तर शेतकऱ्यांपर्यंत मदत का पोहचली नाही. शेतीचे नुकसान झाल्याच्या खुणा आताही शेतात गेल्यावर दिसून येते. असे असताना शेतकरी मदतीपासून का वंचित आहे. हे न उलगडणारे कोडे आहे.

झोरली मौजातील अवघ्या दोनच शेतकऱ्यांना अतिवृष्टीचा फटका बसला, इतरांना नाही का, असा प्रश्न उपस्थित होत आहे. (वार्ताहर)

विष प्राशन करून शेतकऱ्याची आत्महत्या

गिरड : परिसरातील हिवरा येथील शेतकरी योगेश्वर लढी (६०) याने विष प्राशन करून आत्महत्या केली. ही घटना मंगळवारी दुपारी १२.३० वाजताच्या सुमारास उघड झाली.

योगेश्वर यांचा मृतदेह राजू खुडसंगे यांच्या शेतातील एका झाडाखाली आढळला. या घटनेची माहिती गिरड पोलिसांना मिळताच त्यांनी घटनास्थळ गाठून पंचनामा केला. सदर शेतकऱ्यावर स्टेट बँकेचे एक लाख तर सावकाराकडील ५० हजाराचे कर्ज होते. यातच शेतकऱ्याला अत्यल्प उत्पन्न आल्याने त्याने आत्महत्या केल्याची चर्चा परिसरात आहे. या घटनेने गावात हळहळ व्यक्त होत करण्यात येत आहे. आत्महत्याग्रस्त शेतकऱ्याच्या परिवाराला शासनाकडून मदत देण्याची मागणी होत आहे. (वार्ताहर)

कर्जबाजारी शेतकऱ्याची आत्महत्या

वर्धा : नजीकच्या मांडवगड येथील एका शेकऱ्याने विष प्राशन करून आत्महत्या केली. किसना महादेव दुधकोहळे (४५) असे सदर शेतकऱ्याचे नाव आहे. रविवारी सकाळी सातच्या सुमारास त्याने आपल्या घरी विष प्राशन केले. ही बाब घरच्यांच्या लक्षात येताच किशोर दुधकोहळे याने त्याला लगेच कस्तुरबा रुग्णालय सेवाग्राम येथे दाखल केले असता डॉक्टरांनी त्याला मृत घोषीत केले. त्याच्यावर सहकारी बँकेचे तसेच सोसायटीचे कर्ज असल्याचे सांगण्यात येते. त्याच्या पश्चात पत्नी, तीन मुली, आई असा परिवार आहे. त्याच्या एका मुलीची तब्येत सतत खराब होती, तसेच दुसरी मुलगी आंधळी असल्याचे सांगण्यात येते. याप्रकरणी सेवाग्राम पोलिसांनी आकस्मिक मृत्यूची नोंद केली आहे.

प्रश्नावली

नाम :

पत्ता :

मुख्य व्यवसाय :

अन्य व्यवसाय :

1.परिवार में कितने लोग है ?

2. आपके पास खेती के लिए कितनी जमीन है ?

3.क्या फसल अच्छी होती है ?

4.वार्षिक उत्पन्न कितना है ?

5.क्या इतने उत्पान्न से परिवार की जीविका अच्छे से चलती है ?

6.अगर नहीं.? तो वार्षिक उत्पन्न में और कितने ज्यादा उत्पन्न की आवश्यकता है ?

7. खेती के लिए जल का स्रोत क्या है ?

8.क्या सरकार से कृषि के लिए विशेष सुविधाएँ मिलती है ?

9.कौन सी सुविधाओं का लाभ कृषि के लिए होता है ?

10.क्या यह सुविधाएँ प्रायप्त है ?

11.सरकार की तरफ से कौन सी सुविधाएँ मिलनी चाहिए ?

12.इन सुविधाओं के बावजुद आपको कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है ?

13.क्या आपने कृषि के लिए किसी तरह से कर्ज लिया है ?

14.इस कर्ज को आप किस तरह से चुकाऐंगे ?

15.इन समस्याओं का आपके जीवन पर कैसा परिणाम होता है ?

16.क्या आपके परिवार/रिश्तेदार या क्षेत्र में किसी किसान/कृषक ने आत्महत्या की है ?

17.उन्होने किस कारण से आत्महत्या की ?

18.कृषक आत्महत्या के संदर्भ में आपका क्या मत है ? क्या यह सही निर्णय है ? इस पर आपकी क्या राय है ?